प्रथमो भागः

षष्ठवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

संपादिका
श्रीमती उर्मिल खुंगर

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृतशिक्षणार्थम् आदर्शपाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः सामाजिक-विज्ञान-मानविकी-शिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते । अस्मिन्नेव क्रमे षष्ठवर्गीयच्छात्राणां कृते रोचकशैल्या भाषातत्त्वमयान् नैतिकमूल्ययुक्तान् च पाठान् समायोज्य भूमिका-टिप्पणी-प्रश्नाभ्यास-योग्यताविस्तरैश्च सह प्रस्तूयते ***श्रेयसी*** (प्रथमो भागः) नाम पाठ्यपुस्तकम् । अत्र छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासोऽस्माकं लक्ष्यम् । छात्राः संस्कृते निहितं जीवनोपयोगिज्ञानं संस्कृतमाध्यमेन सरलतया च प्राप्नुयुः तेषु नैतिकमूल्यविकासोऽपि भवेत् एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकार्तज्ञं प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुम् अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

जगमोहनसिंहराजपूतः
निदेशकः
राष्ट्रिय-शैक्षिकानुसन्धान-प्रशिक्षण-परिषद्

नवदेहली
जनवरी, 2002

पाठ्य-पुस्तक-निर्माण-समिति

पाठ्यसामग्री-निर्माण-समिति

प्रो. कमलाकान्त मिश्र	श्रीमती उर्मिल खुंगर	डॉ. कृष्णचन्द्र त्रिपाठी
प्रोफेसर, संस्कृत (संयोजक)	सेलेक्शन ग्रेड लेक्चरर, संस्कृत	रीडर, संस्कृत

पाण्डुलिपि-समीक्षा-संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

1. प्रो. विद्यानिवास मिश्र
पूर्व कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

2. प्रो. आद्याप्रसाद मिश्र
पूर्व कुलपति
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

3. प्रो. पंकज चांदे
कुलपति, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत
विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर

4. श्री वासुदेव शास्त्री
अवकाश प्राप्त प्रभारी, संस्कृत
रा.शै.अनु.प्र.सं., उदयपुर

5. श्रीमती शशिप्रभा गोयल
अवकाशप्राप्त रीडर
रा.शै.अनु.प्र.प., दिल्ली

6. डॉ. राजेश्वर प्रसाद मिश्र
रीडर, संस्कृत
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

7. डॉ. लक्ष्मीनिवास पाण्डेय
रीडर, शिक्षाशास्त्र,
केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, लखनऊ

8. श्रीमती कुलवंत कौर
उपप्रधानाचार्या
जे.एन.यू. कैम्पस, नई दिल्ली

9. श्रीमती निर्मल मिश्र
टीजीटी, संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय, जेएनयू कैम्पस, दिल्ली

10. डॉ. सुगन्ध पाण्डेय
टीजीटी, संस्कृत
बीएचईएल कैम्पस, हरिद्वार

11. डॉ. पुरुषोत्तम मिश्र
टीजीटी, संस्कृत
राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय
जहाँगीर पुरी, दिल्ली

आमुख

संस्कृत मानवीय, वैज्ञानिक, नैतिक एवम् आध्यात्मिक महत्त्व की भाषा है । हमारे प्राचीन मनीषियों के ज्ञानानुभव वेद, उपनिषद्, पुराण एवं अन्यान्य साहित्यिक कृतियों के माध्यम से संस्कृत भाषा मे ही सुरक्षित हैं । अतः भारतीय संस्कृति की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि और प्रसार मे संस्कृत का ज्ञान और अध्ययन वर्तमान शिक्षा पद्धति में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है ।

विद्यालयस्तर पर संस्कृत के शिक्षण को रुचिकर रूप में संप्रेषणात्मक उपागम के आधार पर प्रस्तुत करने के लिए स्वीकृत पाठ्यक्रम के अनुसार संस्कृत की नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की योजना राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में प्रारम्भ की गई है । इस योजना के अन्तर्गत सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर पर तीन भागों में नवीन पुस्तक शृङ्खला **श्रेयसी** का निर्माण किया गया है । प्रायः समस्त पुस्तक प्रश्नोत्तर शैली में लिखी गई है । नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण पद्यों का यथास्थान संयोजन किया गया है । रुचिवर्धक, ज्ञानवर्धक, मनोहारी कथाएँ छात्रों में स्वस्थ अभिवृत्ति उत्पन्न करने के लिए सङ्कलित की गई है ।

श्रेयसी पुस्तक शृङ्खला अपने नाम के अनुसार कल्याणपरक तत्त्वों से युक्त है । ये पुस्तकें विद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राओं में भारतीय संस्कृति की स्रोत, संस्कृत भाषा के भाषिक तत्त्वों के प्रयोग मे, अपेक्षित कुशलता तो प्रदान करेंगी ही साथ ही संस्कृत साहित्य के प्रति अपेक्षित अभिवृत्ति भी पैदा कर सकेंगी – ऐसा विश्वास है ।

इसी शृङ्खला का प्रथम पुष्प **श्रेयसी प्रथमो भागः** छात्रों के लिए प्रस्तुत है । इस पुस्तक के निर्माण में ध्यान रखा गया है कि कक्षा मे शिक्षक-छात्र-अन्तःक्रिया संस्कृत भाषा में प्रश्नोत्तर माध्यम से सम्भव हो सके । छात्र संस्कृत भाषा में सरल वाक्यों को समझने, बोलने, पढने और लिखने की क्षमता प्राप्त कर सकें तथा संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रति उनमें रुचि उत्पन्न हो सके ।

छात्र-छात्राओं मे वैज्ञानिक मनोवृत्ति उत्पन्न करने के लिए साहित्य से पर्यावरण की पवित्रता विषयक प्रसङ्गों का चयन किया गया है । शब्दकोश की सहायता से शब्दार्थज्ञान प्राप्त करने की कुशलता प्राप्त कर सकें– एतदर्थ पुस्तक के अन्त मे अकारादिक्रम से समस्त

कठिन शब्दों का पद-परिचय सहित शब्द-बोध भी इस पुस्तक की विशेषता है। सङ्क्षेप में श्रेयसी प्रथम भाग में निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान दिया गया है –

- संस्कृत शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण ।
- प्रारम्भ से ही प्रश्नोत्तर माध्यम से प्रश्नों के उत्तर और प्रदत्त कथनों के आधार पर प्रश्न-निर्माण की कुशलता ।
- भाषिक तत्त्वों (सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना) के प्रयोग की क्षमता।
- नैतिक मूल्यों से युक्त संस्कृत पद्यों का परिचय ।
- संस्कृत में वार्त्तालाप कर सकने की क्षमता ।
- रोचक कथाओं को पढ़कर घटनाक्रम का संयोजन कर सकने की क्षमता ।
- अध्यापन बिन्दुओं पर आधारित रोचक एवं ज्ञानवर्धक अभ्यास ।
- प्रतिपाठ शब्दार्थ परिचय ।
- अकारादिक्रम से पदानुक्रमणी और पद-परिचय ।
- पाठों में महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक चित्र संयोजन ।
- चित्राधारित मनोरञ्जक अभ्यासों द्वारा शब्द ज्ञान ।

शिक्षक की भूमिका

कोई भी पाठ्यक्रम तथा पुस्तक कितनी ही वैज्ञानिक और सुरुचिपूर्ण क्यों न हो, शिक्षक की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता । अध्यापन की सफलता के लिए जहाँ एक ओर तकनीकी शैली से युक्त पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा रहती है, वहाँ दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित व्याकरणिक बिन्दुओं और भाषिक तत्त्वों के प्रायोगिक अभ्यास हेतु कुशल अध्यापन शैली भी अपेक्षित है । अतः यह आशा की जाती है कि शिक्षकगण प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से भाषा के अपेक्षित कौशलों को छात्रों तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान कर सकेंगे ।

श्रेयसी के माध्यम से संस्कृत के छात्र श्रेयस् को प्राप्त करें, इस सद्भावना के साथ इस पुस्तक के निर्माण में जिन अनुभवी विद्वानों एवं अध्यापकों ने अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है, उनके प्रति परिषद् अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती है ।

पाठानुक्रमणिका

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो. क. गांधी

वन्दना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,

त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।। 1।।

करारविन्देन पदारविन्दं,

मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।

वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं,

बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ।। 2।।

भावार्थः

तुम ही माता हो, तुम ही पिता हो, तुम ही बन्धु हो, तुम ही सखा हो ।
तुम ही विद्या हो, धन भी तुम ही हो, हे देवाधिदेव ! तुम ही सर्वस्व हो ।। 1।।

कररूपी कमल से अपने चरण रूपी कमल को मुखरूपी कमल में डालते हुए बड़ के पत्ते के दोने पर लेटे हुए श्री बालमुकुन्द (श्रीकृष्ण) को मैं मन से स्मरण करता हूँ ।। 2।।

प्रथमः पाठः

अकारान्तपुंल्लिङ्गः

एषः कः?

एषः बालकः ।

बालकः किं करोति?

बालकः पठति ।

एषः कः?

एषः माधवः ।

माधवः किं करोति

माधवः नमति ।
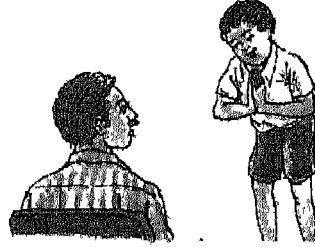
एषः कः ?

एषः वानरः ।

वानरः किं करोति?

वानरः खादति ।

एते के ?
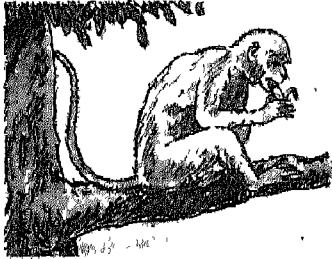
एते बालकाः ।

बालकाः किं कुर्वन्ति?

बालकाः पठन्ति ।

एषः कः?
एषः अश्वः ।
अश्वः किं करोति?
अश्वः धावति ।

एते के?
एते नराः ।
नराः किं कुर्वन्ति?
नराः पठन्ति ।

एते के?
एते अश्वाः ।
अश्वाः किं कुर्वन्ति?
अश्वाः धावन्ति ।

शब्दार्थाः

एषः (पुं.)	–	यह
कः (पुं.)	–	कौन
बालकः	–	(एक) लड़का
किम्	–	क्या
वानरः	–	(एक) बन्दर
करोति	–	करता है/ करती है
खादति	–	खाता है/ खाती है
एते (पुं.)	–	(ये)सब
के (पुं.)	–	(बहुत से) कौन

कुर्वन्ति	–	करते हैं/ करती हैं
बालकाः	–	(बहुत से) लड़के
पठन्ति	–	पढ़ते हैं / पढ़ती हैं
नराः	–	(बहुत से) मनुष्य
अश्वः	–	(एक) घोड़ा
धावति	–	दौड़ता है/दौड़ती है
धावन्ति	–	दौड़ते हैं/दौड़ती हैं
अश्वाः	–	(बहुत से) घोड़े

सर्वनाम-प्रयोगः

बालकः पठति, बालकः न खेलति ।
बालकः पठति, सः न खेलति ।

वानरः खादति, वानरः न पठति ।
वानरः खादति, सः न पठति ।
अश्वः धावति, अश्वः न नमति ।
अश्वः धावति, सः न नमति ।
बालकाः पठन्ति, बालकाः लिखन्ति च।

बालकाः पठन्ति, ते लिखन्ति च ।
वानराः खादन्ति, वानराः न पठन्ति ।
वानराः खादन्ति, ते न पठन्ति ।
अश्वाः धावन्ति, अश्वाः न नमन्ति ।
अश्वाः धावन्ति, ते न नमन्ति ।

अभ्यासः

1. मौखिकम् उच्चारणं कुरुत

(क) बालक – बालकः

सिंह	–	सिंहः
वानर	–	वानरः
अश्व	–	अश्वः
वृक्ष	–	वृक्षः
(ख) बालकः	–	बालकाः
सिंहः	–	सिंहाः
गजः	–	गजाः
अश्वः	–	अश्वाः
वृक्षः	–	वृक्षाः

2. भेदं ज्ञात्वा शुद्धरूपस्य उच्चारणं कुरुत

अशुद्धं रूपम्	*शुद्धं रूपम्*
एषः पठती	एषः पठति
एषः हसती	एषः हसति
एषः लिखती	एषः लिखति
एषः धावती	एषः धावति
एषः क्रीडती	एषः क्रीडति
एषः खादती	एषः खादति

3. चित्रं दृष्ट्वा उत्तरं लिखत

बालकः किं करोति?

————————।

गजः किं करोति?

————————।
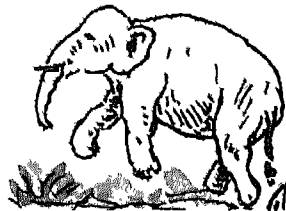
सिंहः किं करोति?

——————————।

बालकाः किं कुर्वन्ति?

——————————।
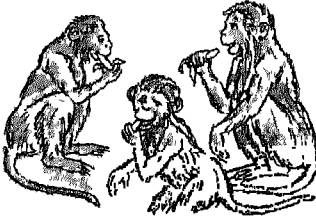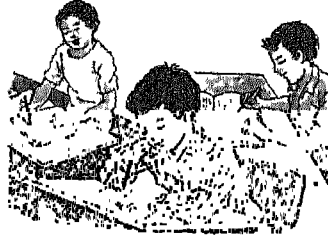
वानराः किं कुर्वन्ति?

——————————।

4. मेलनं कृत्वा वाक्यानि रचयत

सिंहाः	लिखति
अश्वः	फलति
बालकः	गर्जन्ति
वृक्षः	धावति
गजाः	खादति
वानरः	चलन्ति

5. रिक्तस्थानानि पूरयत

चरन्ति, पठति, लिखति, धावन्ति, चलति, चलन्ति।

(क) मृगाः ——————————।

(ख) गजाः ———————————— ।
(ग) नरः ———————————— ।
(घ) बालकः———————————— ।
(ङ) अश्वाः ———————————— ।
(च) गजः ———————————— ।

6 उदाहरणं दृष्ट्वा रिक्तस्थानानि पूरयत

यथा – अश्वाः धावन्ति, ते न पठन्ति ।
बालकः पठति, सः न लिखति ।

(क) मृगाः चरन्ति, ———————————— न धावन्ति ।
(ख) गजः चलति, ———————————— न धावति ।
(ग) वानरः खादति, ———————————— न पठति ।
(घ) अश्वाः खादन्ति, ———————————— न धावन्ति ।
(ङ) नरः पठति,———————————— न धावति ।

द्वितीयः पाठः

आकारान्तस्त्रीलिङ्गः

एषः कः?

एषः बालकः ।

बालकः किं करोति?

बालकः पठति ।

किं सः खेलति ?

सः नहि खेलति, सः तु पठति ।

एषा का?

एषा बालिका ।

बालिका किं करोति?

बालिका अपि पठति ।

किं सा खेलति ?

सा नहि खेलति, सा तु पठति ।

एषः कः ?

एषः बालकः ।

बालकः किं करोति ?

बालकः लिखति ।

किं सः पठति ?

सः नहि पठति, सः तु लिखति ।

एषा का?
एषा बालिका ।
बालिका किं करोति?
बालिका लिखति ।
किं सा पठति ?
सा नहि पठति, सा तु लिखति ।

एते के ?
एते बालकाः ।
बालकाः किं कुर्वन्ति?
बालकाः क्रीडन्ति ।
किं ते अत्र पठन्ति?
ते अत्र नहि पठन्ति, ते तु खेलन्ति ।

एताः काः?
एताः बालिकाः ।
बालिकाः किं कुर्वन्ति ?
बालिकाः क्रीडन्ति ।
किं ताः अत्र पठन्ति?
ताः अत्र नहि पठन्ति, ताः तु क्रीडन्ति।

एषा का?
एषा वाटिका ।
अत्र लताः सन्ति ।
अत्र वृक्षाः अपि सन्ति ।
कोकिलाः गायन्ति ।
खगाः विहरन्ति । भ्रमराः गुञ्जन्ति ।
वृक्षाः फलन्ति ।
जनाः भ्रमन्ति ।
बालाः क्रीडन्ति ।

शब्दार्थाः

एषा (स्त्री.)	–	यह
बालिका	–	लड़की
अपि (अव्यय)	–	भी
सा (स्त्री.)	–	वह
नहि (अव्यय)	–	नहीं
तु (अव्यय)	–	तो
नृत्यति	–	नाचता है/नाचती है
क्रीडन्ति	–	खेलते हैं / खेलती हैं
अत्र (अव्यय)	–	यहाँ
ताः (स्त्री.)	–	वे सब
इयम् (स्त्री.)	–	यह
लताः	–	बहुत सी लतायें
कोकिलाः	–	बहुत से/बहुत सी कोयलें
गायन्ति	–	गाते हैं/ गाती हैं
खगाः	–	बहुत से पक्षी
भ्रमराः	–	बहुत से भौंरें
गुञ्जन्ति	–	गूँजते हैं / गूँजती हैं
विहरन्ति	–	विचरण करते हैं / विचरण करती हैं
सन्ति	–	हैं

अभ्यासः

1. मौखिकम् उच्चारणं कुरुत

(क) बालकः	–	बालिका
छात्रः	–	छात्रा

सः – सा

मूषकः – मूषिका

(ख) बालिका – बालिकाः

छात्रा – छात्राः

सा – ताः

मूषिका – मूषिकाः

2. वाटिकायां किं किम् अस्ति? लिखत

यथा – लताः

_______ _______ _______ _______ _______

3. चित्रं दृष्ट्वा उत्तरं लिखत

यथा – बालिका किं करोति?
बालिका पठति ।

छात्राः किं कुर्वन्ति?

______________________ ।

बालकः किं करोति

______________________ ।

बालिकाः किं कुर्वन्ति?

______________________ ।

4. कोष्ठकात् उचितं शब्दं चित्वा वाक्यं पूरयत

यथा – बालिका पठति। (बालिका/बालिकाः)

क. ________ लिखति। (छात्रा/छात्राः)

ख. ________ गायन्ति । (चटका/ चटकाः)

ग. ________ हसन्ति । (बालिका / बालिकाः)

घ. ________ धावति । (मूषिका/मूषिकाः)

ङ. ________ चरति । (अश्वा / अश्वाः)

5. प्रश्ननिर्माणं कुरुत

यथा – बालिका क्रीडति । बालिका किं करोति ?

कोकिलाः गायन्ति । कोकिलाः किं कुर्वन्ति?

क. अश्वाः चरन्ति । ________?

ख. मूषिका धावति । ________?

ग. बालिकाः हसन्ति । ________?

घ. बालिकाः नृत्यन्ति । ________?

6. रिक्तस्थानानि पूरयत

क. बालिका ________ ।

ख. ________ क्रीडति ।

ग. छात्राः ________ ।

घ. रमा ________ ।

ङ. ________ हसन्ति ।

7. सः , सा ते, ताः – इत्येतेभ्यः उचितं सर्वनामपदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत

क. सुधा वदति । ———————— वदति ।

ख. बालकः क्रीडति । ———————— क्रीडति ।

ग. बालिकाः हसन्ति । ———————— हसन्ति ।

घ. बालकाः धावन्ति । ———————— धावन्ति ।

ङ. राधा पठति । ———————— पठति ।

तृतीयः पाठः

अकारान्तनपुंसकलिङ्गः

एतत् किम् अस्ति?
एतत् आम्रम् अस्ति ।
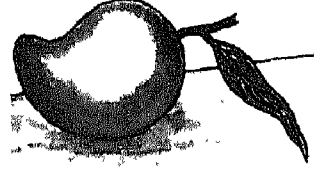
एतानि कानि सन्ति?
एतानि आम्राणि सन्ति ।

एतत् किम् अस्ति?
एतत् कमलम् अस्ति ।
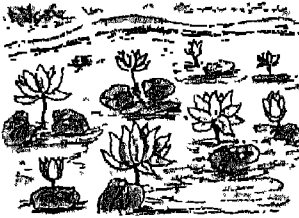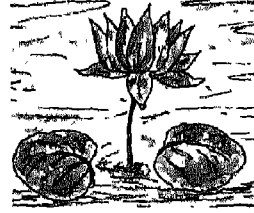
एतानि कानि सन्ति?
एतानि कमलानि सन्ति ।

एतत् किम् ?
एतत् पुस्तकम् ।
किम् एतत् कमलम् ?
एतत् कमलं नास्ति, एतत् तु पुस्तकम् ।
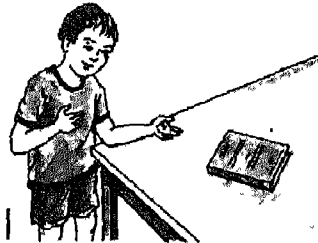
एतानि कानि?
एतानि पुस्तकानि ।
किम् एतानि आम्राणि?
नहि, एतानि न आम्राणि,
एतानि तु पुस्तकानि ।
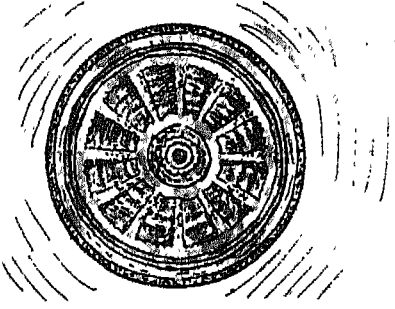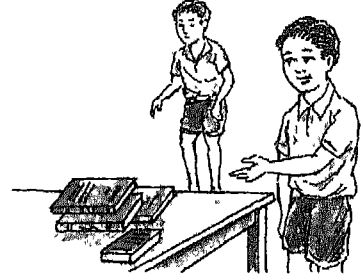
एतत् किं चलति?
एतत् चक्रं चलति ।
किम् एतत् चक्रं पतति ?
नहि, एतत् चक्रं न पतति,
एतत् चक्रं तु चलति।

एतानि कानि सन्ति ?
एतानि चक्राणि सन्ति ।
किम् एतानि पुस्तकानि सन्ति ?
नहि, एतानि पुस्तकानि न सन्ति,
एतानि तु चक्राणि सन्ति ।
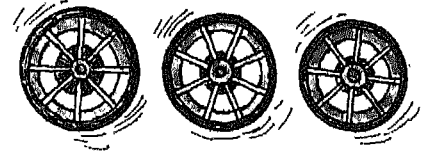
एषः कः ?
एषः हस्तः ।
किम् एते हस्ताः ?
नहि, अत्र तु एकः एव हस्तः ।

एते के?
एते मयूराः ।
मयूराः किं कुर्वन्ति ?
मयूराः नृत्यन्ति ।
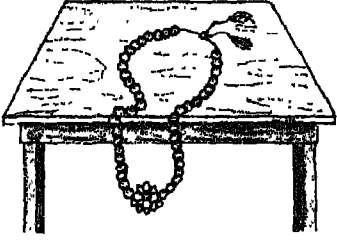
एषा का?
एषा माला ।
किम् अत्र मालाः सन्ति?
नहि, अत्र तु एका एव माला अस्ति।

एताः काः?
एताः मालाः ।
किम् एताः कलिकाः?
नहि, एताः तु मालाः ।
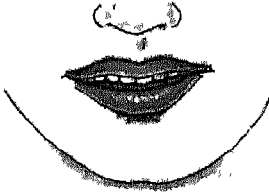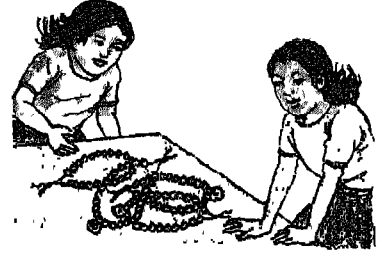
एतत् किम् अस्ति?
एतत् मुखम् अस्ति ।

एतत् किम् अस्ति?
एतत् नेत्रम् अस्ति ।
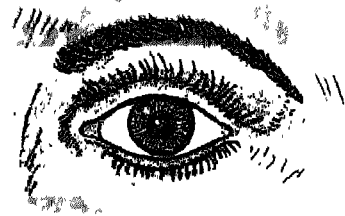
एषा का अस्ति?
एषा नासिका अस्ति ।

एषः कः अस्ति?
एषः पादः अस्ति ।

एषः कः अस्ति ?
एषः नखः अस्ति ।
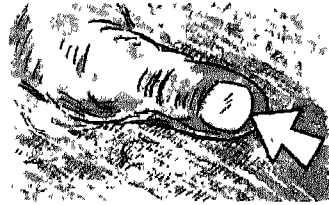
शब्दार्थाः

एतत् (नपुं.)	–	यह
एतानि (नपुं.)	–	ये
आम्रम्	–	आम
आम्राणि	–	बहुत से आम
कानि (नपुं.)	–	बहुत से कौन/ क्या
कमलम्	–	एक कमल
पुस्तकम्	–	एक किताब
पुस्तकानि	–	बहुत सी किताबें
चक्रम्	–	एक पहिया
चक्राणि	–	बहुत से पहिये

पतति	–	गिरता है / गिरती है
मयूराः	–	बहुत से मोर
एताः (स्त्री.)	–	ये
हस्तः	–	एक हाथ
हस्ताः	–	बहुत से हाथ
एकः	–	एक (पुं.)
एका	–	एक (स्त्री.)
एव	–	ही

अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत

तत्	–	तानि
पत्रम्	–	पत्राणि
फलम्	–	फलानि
चक्रम्	–	चक्राणि
पुस्तकम्	–	पुस्तकानि
कमलम्	–	कमलानि
पुष्पम्	–	पुष्पाणि
गृहम्	–	गृहाणि
चित्रम्	–	चित्राणि

2. चित्रं दृष्ट्वा उत्तरं लिखत

यथा–

किं पतति ?
पत्रं पतति ।

के क्रीडन्ति ?

____

काः धावन्ति ?

____

कानि विकसन्ति ?

____

कः हसति ?

____

बालिका किं करोति ?

____

तत् किम् ?

____
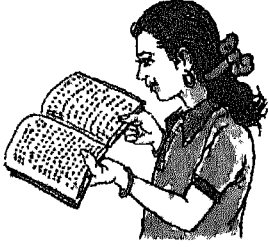
छात्रा किं करोति ?

____

3. एकवचनात् बहुवचने परिवर्तयत

यथा – चक्रं भ्रमति । चक्राणि भ्रमन्ति ।

(क) फलं पतति । ________________ ।

(ख) कमलं विकसति । ________________ ।

(ग) पत्रं पतति । ________________ ।

(घ) पुष्पं विकसति । ________________ ।

4. वाक्येषु रेखाङ्कितशब्दानां स्थाने सः / ते/ सा/ ताः/ तत्/तानि इति उपयुक्तपदस्य यथास्थानम् प्रयोगं कुरुत

यथा – <u>बालिकाः</u> धावन्ति । ताः न पतन्ति ।

बालिका धावति, सा न पतति ।

क. पुष्पाणि विकसन्ति । <u>पुष्पाणि</u> न पतन्ति ।

____________ विकसन्ति, ____________ न पतन्ति ।

ख. चक्रम् चलति । <u>चक्रम्</u> न तिष्ठति ।

____________ चलति, ____________ न तिष्ठति ।

ग. बालिकाः पठन्ति । <u>बालिकाः</u> लिखन्ति अपि ।

____________ पठन्ति, ____________ लिखन्ति अपि ।

घ. अश्वाः चलन्ति । <u>अश्वाः</u> धावन्ति अपि ।

____________ चलन्ति ____________ धावन्ति अपि ।

5. रेखाङ्कितपदानां स्थाने उचितं सर्वनामपदं लिखत

यथा – फलम् पतति । तत् पतति ।

क. बालिकाः हसन्ति । ——— हसन्ति ।

ख. कमलानि विकसन्ति । ——— विकसन्ति ।

ग. नरः चलति । ——— चलति ।

घ. अश्वाः धावन्ति । ——— धावन्ति ।

ङ. छात्रा पठति । ——— पठति ।

चतुर्थः पाठः

त्वम् - यूयम्; अहम् - वयम्

एषः कः?

एषः जलाशयः ।

अत्र वृक्षाः सन्ति ।

अत्र कमलानि विकसन्ति ।

अत्र बालिकाः क्रीडन्ति ।

बालकाः अपि क्रीडन्ति ।

खगाः कूजन्ति । वर्त्तकाः तरन्ति ।

अहम् अपि अत्र खेलामि, भ्रमामि, गायामि च ।

यूयम् अपि खेलथ, भ्रमथ, गायथ च ।

सुरभिः – तव नाम किम्?

गौरवः – मम नाम गौरवः ।
तव नाम किम्?

सुरभिः – मम नाम सुरभिः ।

सुरभिः – गौरव ! त्वं किं करोषि?

गौरवः – सुरभे ! अहं पठामि ।
त्वम् किं करोषि ?

सुरभिः – अहम् अपि पठामि ।

गौरवः – सुरभे ! किं त्वं गायसि?

सुरभिः – आम्, अहं गायामि, नृत्यामि, खेलामि, भ्रमामि च । किं त्वं न गायसि?

गौरवः – आम्, अहम् अपि गायामि परम् अहं न नृत्यामि ।

शिक्षिका – छात्राः ! यूयं किं कुरुथ?

छात्राः – वयं पठामः ।

शिक्षिका – किम् यूयं खेलथ ?

छात्राः – नहि, आचार्ये ! वयं प्रातः पठामः । सायं खेलामः ।

आचार्यः – बालकाः यूयं किं कुरुथ?

बालकाः – आचार्य ! वयं खेलामः ।

आचार्यः – बालकाः ! किं यूयं न पठथ?

बालकाः – आचार्य ! वयं प्रातः पठामः ।

शब्दार्थाः

अहम्	–	मैं
वयम्	–	हम सब
त्वम्	–	तुम
यूयम्	–	तुम सब
तव	–	तुम्हारा/तुम्हारी
मम	–	मेरा/मेरी

आम्	–	हाँ
च	–	और
परम्	–	परन्तु
प्रातः	–	सुबह
बालिकाः!	–	हे लड़कियों !
करोषि	–	करते हो/ करती हो
गायसि	–	गाते हो/ गाती हो
गायामि	–	गाता हूँ/ गाती हूँ
भ्रमामि	–	घूमता हूँ / घूमती हूँ
खेलामि	–	खेलता हूँ/ खेलती हूँ
नृत्यामि	–	नाचता हूँ/ नाचती हूँ
पठामि	–	पढ़ता हूँ / पढ़ती हूँ
पठामः	–	पढ़ते हैं/ पढ़ती हैं
खेलामः	–	खेलते हैं/ खेलती हैं
गायथ	–	गाते हो/ गाती हो
पठथ	–	पढ़ते हो/ पढ़ती हो
भ्रमथ	–	घूमते हो/ घूमती हो
विहरथ	–	विहार करते हो/ विहार करती हो
खेलथ	–	खेलते हो/ खेलती हो
कुरुथ	–	करते हो/करती हो
कूजन्ति	–	कूकते हैं / कूकती हैं
तरन्ति	–	तैरते हैं/ तैरती हैं
वर्तकाः	–	(बहुत से) बत्तख
वृक्षाः	–	(बहुत से) पेड़
खगाः	–	(बहुत से) पक्षी
जलाशयः	–	तालाब

अभ्यासः

1. वचनपरिवर्तनं कुरुत

यथा– सः पठति । — ते पठन्ति ।

क. सा पचति । — ________ ।

ख. तत् पतति । — ________ ।

ग. त्वम् पठसि । — ________ ।

घ. बालकः चलति । — ________ ।

ङ. बालिका क्रीडति । — ________ ।

च. अहम् वदामि । — ________ ।

छ. भल्लूकः नृत्यति । — ________ ।

ज. गजः चलति । — ________ ।

झ. अश्वः धावति । — ________ ।

ट. छात्रा हसति । — ________ ।

2. लिङ्गपरिवर्तनं कुरुत

यथा – सः	सा
छात्रः	________
________	बाला
अजः	________
________	वत्सा
अश्वः	________

3. क्रियापदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत

पतन्ति	हससि	वदन्ति	लिखन्ति	लिखथ
पठामः	पचति	खेलन्ति	विकसति	भ्रमामि

यथा – बालकः ________ । बालकः पठति ।

क. ते ________ ।

ख. छात्राः ________ ।

ग. वयम् ________ ।

घ. बालिका ———————— ।
ङ. फलानि ———————— ।
च. कमलम् ———————— ।
छ. ताः ———————— ।
ज. त्वम् ———————— ।
झ. यूयम् ———————— ।
ट. अहम् ———————— ।

4. चित्राणि दृष्ट्वा मञ्जूषातः फलनामानि लिखत

यथा–

द्राक्षाफलानि ———————— । ———————— ।

———— । ———— ।

कदलीफलानि	नारिकेलम्	आम्राणि	दाडिमम्

5. वार्त्तालापे रिक्तस्थानानि पूरयत

सुलेखा — माले! ———————— किं करोषि?
माला — सुलेखे ! ———— नृत्यामि, ———— किं करोषि?
सुलेखा — माले! ———— गायामि । किं ———— न गायसि?
माला — सुलेखे ! न गायामि, ———————— तु नृत्यामि ।
सुलेखा — माले! किं ———————— पठसि?
माला — आम्, अहं ———————— खेलामि च ।
किं ———————— न खेलसि?
सुलेखा — आम्, अहम् अपि ———————— ।

पञ्चमः पाठः

द्वितीयप्रयोगः

रामः – श्याम! त्वं कुत्र गच्छसि?

श्यामः – राम! अहम् उद्यानं गच्छामि। त्वं कुत्र गच्छसि?

रामः – अहं तु उद्यानं न गच्छामि; अहं तु विद्यालयं गच्छामि ।

श्यामः – तत्र त्वं किं किं करोषि ?

रामः – तत्र अहं पुस्तकं पठामि, लेखं लिखामि, चित्राणि रचयामि, खेलामि च।

श्यामः – अहो ! त्वं तु तत्र बहूनि कार्याणि करोषि । अहम् तु उद्यानम् एव गच्छामि तत्र कार्यं करोमि । त्वं गृहं कदा आगच्छसि?
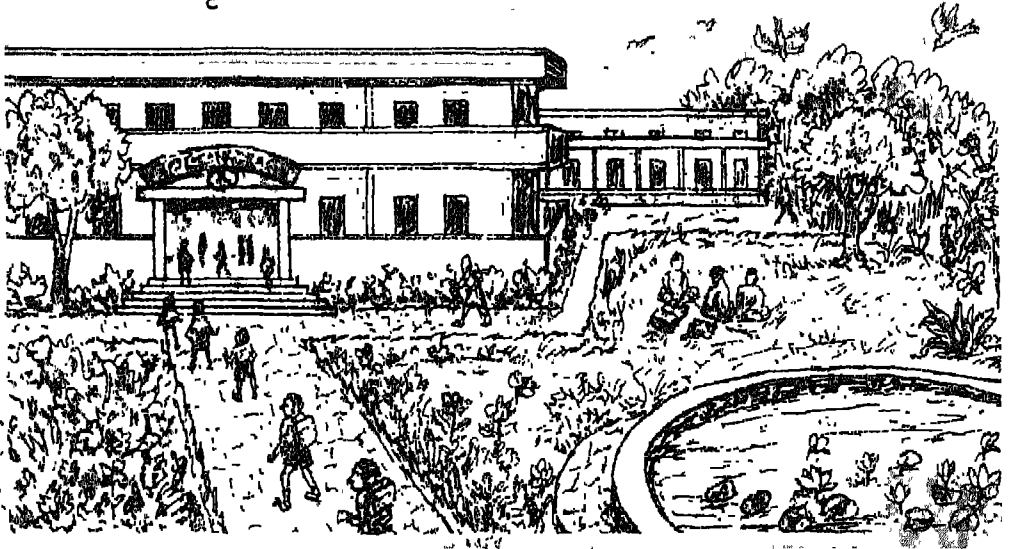
रामः – अहं तु सायम् एव गृहम् आगच्छामि ।

श्यामः – अहं तु प्रतिदिनम् आपणं गच्छामि । ततः पुष्पाणि आनयामि । मालाः रचयामि। गृहं गृहं गच्छामि । मालाः यच्छामि ।

रामः – त्वं तु अतीव परिश्रमं करोषि । किं त्वं विद्यालयं गच्छसि न वा?

श्यामः – आम् । अहं सायं शालां गच्छामि, पाठं पठामि, श्लोकान् अपि गायामि।

रामः – कं श्लोकम् ?

श्यामः – अधरं मधुरं वदनं मधुरम्, नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरम्, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।

धन्यः त्वम् उद्यमशीलः ।

शब्दार्थाः

कुत्र (अव्यय)	–	कहाँ
तत्र (अव्यय)	–	वहाँ
कदा (अव्यय)	–	कब
सायम् (अव्यय)	–	शाम को
अहो	–	अरे
उद्यानम्	–	बाग (को)
विद्यालयम्	–	पाठशाला (को)
पुस्तकम्	–	किताब (को)
लेखम्	–	लेख को/ निबन्ध को
गृहम्	–	घर (को)
कार्याणि	–	कार्यों (को)
बहूनि	–	बहुत से

चित्राणि	–	चित्रों को
गच्छसि	–	जाते हो / जाती हो
रचयामि	–	बनाता हूँ/ बनाती हूँ
गच्छामि	–	जाता हूँ/जाती हूँ
आपणम्	–	बाजार
आनयामि	–	लाता हूँ / लाती हूँ
यच्छामि	–	देता हूँ / देती हूँ
अतीव	–	बहुत
शालाम्	–	पाठशाला को
उद्यमशीलः	–	उद्यमी स्वभाव वाला

अभ्यासः

1. अधोलिखितेभ्यः शब्देभ्यः समुचितं शब्दं चित्वा उदाहरणानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत

पुष्पाणि	मालाम्	आम्रम्	सूर्यम्

उदाहरणम् – अहम् उद्यानम् आगच्छामि ।

क. सः —————— इच्छति ।
ख. जनाः —————— आराधयन्ति ।
ग. त्वम् —————— आनयसि ।
घ. बालिकाः —————— आनयन्ति ।

2. संवादे रिक्तस्थानानि पूरयत

रमा – लते ! किं त्वं विद्यालयं —————— ?
लता – रमे ! न, अहं ———— न गच्छामि । अहं तु देवालयं ————।

रमा – लते ! किं त्वं प्रतिदिनं देवालयं —————— ?

लता – आम्, अहं —————— देवालयं ————।

किं त्वं देवालयं न —————— ?

रमा – नहि अहं प्रतिदिनं सायं देवालयं —————— ।

प्रातः तु विद्यालयं —————— ।

3. अहम्/त्वम्/वयम्/यूयम् इति उपयुक्तशब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत

यथा – एतत् गृहम् । अहम् अत्र वसामि ।

क. एतत् पुस्तकम् । —————— पुस्तकं पठामि ।

ख. एषा वाटिका । —————— अत्र विहरसि ।

ग. किं —————— क्रीडथ? आम् —————— अत्र क्रीडामः ।

घ. किं ———— पुष्पाणि पश्यथ? आम् ———— पुष्पाणि पश्यामः ।

ङ. —————— विद्यालयं गच्छामः । ———— कुत्र गच्छथ?

4. मञ्जूषातः शब्दान् चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत

चित्रम्	फलानि	पत्रम्	रमाम्	दुग्धम्
पुस्तकम्	भोजनम्	गीतम्	मधुरम्	

क. अहम् —————— खादामि ।

ख. त्वम् —————— पिबसि ।

ग. छात्रः —————— पश्यति ।

घ. सुलेखा —————— लिखति ।

च. श्यामः —————— पठति ।

छ. बालकाः —————— खादन्ति ।

ज. कोकिला —————— गायति ।

झ. त्वम् —————— पश्यसि ।

ट. बालिका —————— गायति ।

5. उदाहरणं दृष्ट्वा वचनपरिवर्तनं कुरुत

एकवचनम्	बहुवचनम्
यथा– सः	ते
अहम्	____________
त्वम्	____________
अस्ति	____________
पश्यसि	____________
पश्यति	____________
सा	____________
एषः	____________
पठामि	____________

षष्ठः पाठः

षष्ठीप्रयोगः

एषः कः?

एषः शुकः ।

शुकस्य वर्णः हरितः ।
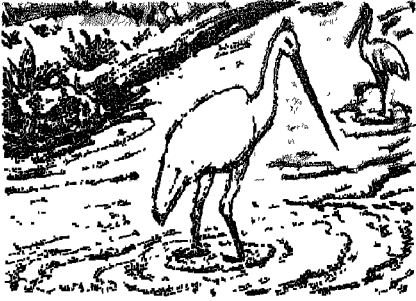
एषः कः ?

एषः बकः ।

बकस्य वर्णः श्वेतः ।

एषा का ?

एषा कोकिला ।

कोकिलायाः वर्णः कृष्णः ।
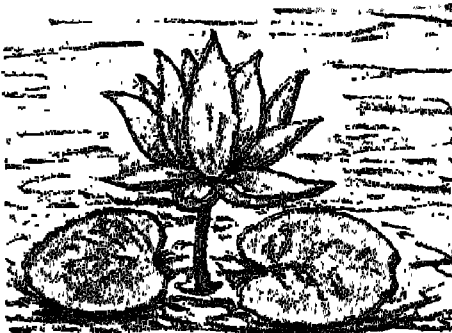
एतत् किम् ?

एतत् कमलम् ।

कमलस्य वर्णः रक्तः ।

एतानि कानि ?
एतानि पत्राणि ।
पत्राणां वर्णः हरितः ।
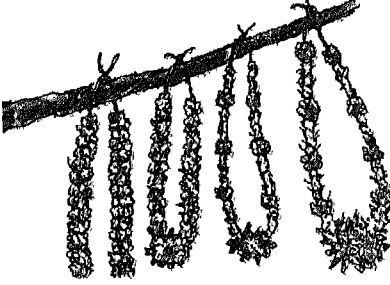
एताः मालाः ।
एताः कुसुमानां मालाः ।
वयम् कुसुमानां मालाः धारयामः ।

एते वृक्षाः
वृक्षाणाम् उपरि खगाः निवसन्ति ।
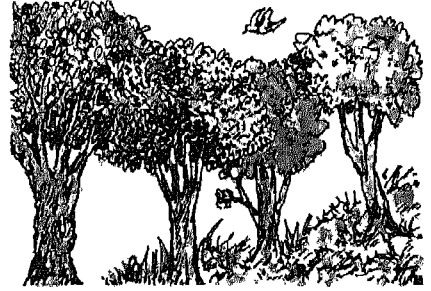
रामः – एतत् कस्य गृहम् ?
हरिः – एतत् गोविन्दस्य गृहम् ।
रामः – तत् कस्य गृहम्?
हरिः – तत् मोहनस्य गृहम्।

रामः – कस्य गृहं विद्यालयस्य
समीपे अस्ति?
हरिः – गोविन्दस्य गृहं विद्यालयस्य
समीपे अस्ति।
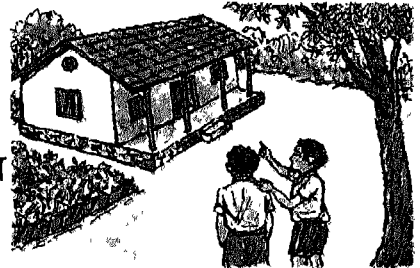
रामः – तव गृहं कुत्र अस्ति?
हरिः – मम गृहं तु उद्यानस्य समीपे अस्ति । तव गृहं कुत्र अस्ति ?
रामः – मम गृहम् अपि विद्यालयस्य समीपे अस्ति।

शब्दार्थाः

उद्यानस्य	–	बाग का/के/ की
विद्यालयस्य	–	विद्यालय का/ के / की
मोहनस्य	–	मोहन का/ के/की
कस्य	–	किसका / किसकी
शुकस्य	–	तोते का/ के / की
बकस्य	–	बगुले का/ के / की
एतस्य (पुं.)	–	इसका
कुसुमानाम्	–	फूलों का/के /की
पत्राणाम्	–	पत्रों का/के / की
वृक्षाणाम्	–	पेड़ों का/ के/ की
कोकिलायाः	–	कोयल का/के /की
कोकिला	–	एक कोयल
मालाः	–	बहुत सी मालायें
वर्णः	–	रंग
शुकः	–	एक तोता
श्वेतः	–	सफेद
हरितः	–	हरा
बकः	–	एक बगुला
समापे (अव्यय)	–	पास
उपरि (अव्यय)	–	ऊपर
धारयामः	–	धारण करते हैं / धारण करती हैं

अभ्यासः

मौखिकः

1. रेखाङ्कितपदानां वचन-परिवर्तनं कुरुत

क. पुष्पस्य वर्णः श्वेतः ।
——————— वर्णः श्वेतः ।

ख. वृक्षस्य छाया शीतला ।
——————— छाया शीतला ।

ग. पुस्तकस्य चित्राणि विचित्राणि ।
——————— चित्राणि विचित्राणि ।

घ. काकस्य वर्णः कृष्णः ।
——————— वर्णः कृष्णः ।

ङ. पिकस्य स्वरः मधुरः ।
——————— स्वरः मधुरः ।

2. कः कस्य पुत्रः/पुत्री वा? लिखत

यथा – रामः दशरथस्य पुत्रः । (दशरथ)

क. कृष्णः ——————— पुत्रः । (वसुदेव)
ख. अभिमन्युः ——————— पुत्रः । (अर्जुन)
ग. दुर्योधनः ——————— पुत्रः । (धृतराष्ट्र)
घ. सीता ——————— पुत्री । (जनक)
ङ. द्रौपदी ——————— पुत्री । (द्रुपद)

3. कः कस्य पिता/माता वा? लिखत

यथा – दशरथः रामस्य पिता । (राम)

क. वसुदेवः ——————— पिता । (कृष्ण)
ख. रामः ——————— पिता । (लव)
ग. कौशल्या ——————— माता । (राम)
घ. सुमित्रा ——————— माता । (लक्ष्मण)
ङ. कैकेयी ——————— माता । (भरत)

4. रेखाङ्कितपदम् एकवचने परिवर्तयत

यथा – गृहाणां समीपे – गृहस्य समीपे ।

क. पादपानां छाया – ________________ छाया ।

ख. मेघानां गर्जनम् – ________________ गर्जनम् ।

ग. भ्रमराणां गुञ्जनम् – ________________ गुञ्जनम् ।

घ. मूषकाणां बिलम् – ________________ बिलम् ।

ङ. सिंहानां निद्रा – ________________ निद्रा ।

5. कोष्ठकेषु प्रदत्तेषु शब्देषु विभक्तिचिह्नं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत

क. सः ________________ अश्वः अस्ति । (रमेश)

ख. मोहनः ________________ पुत्रः अस्ति । (गोविन्द)

ग. ________________ समीपे कूपः अस्ति । (उद्यान)

घ. ________________ समूहः कुत्र धावति ? (छात्र)

सप्तमः पाठः

सप्तमीप्रयोगः

एतत् किम् ?

एतत् विद्यालयस्य उद्यानम् ।

उद्याने के विचरन्ति?

उद्याने मृगाः विचरन्ति ।

किम् अत्र वृक्षाः अपि सन्ति?

आम्, अत्र विविधाः वृक्षाः अपि सन्ति

वृक्षेषु पुष्पाणि विकसन्ति ।

पुष्पेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति ।
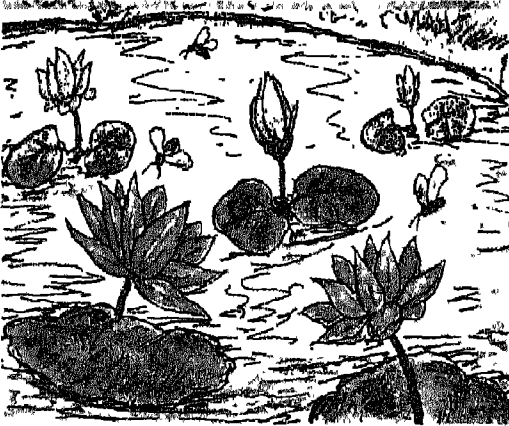
एषः कः?

एषः तड़ागः ।

तड़ागे किम् अस्ति?

तड़ागे जलम् अस्ति ।

जले कानि सन्ति?

जले कमलानि सन्ति ।

कमलेषु के गुञ्जन्ति ?

कमलेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति ।

एषा का ?
एषा गङ्गा ।
गङ्गायां किम् अस्ति?
गङ्गायां जलम् अस्ति ।
गङ्गायां काः तरन्ति?
गङ्गायां नौकाः तरन्ति ।
गङ्गायां मत्स्याः अपि तरन्ति ।
गङ्गायाः तीरे द्रुमाः सन्ति ।
द्रुमेषु खगाः निवसन्ति । द्रुमाणां पत्राणि गङ्गायां पतन्ति ।

शब्दार्थाः

तड़ागः	–	तालाब
विविधाः	–	बहुत से
द्रुमाः	–	बहुत से पेड़
मत्स्याः	–	बहुत-सी मछलियाँ
नौकाः	–	बहुत सी नावें
जलम्	–	पानी
पुष्पाणि	–	बहुत से फूल
पत्राणि	–	पत्तियाँ/पत्ते
कमलानि	–	बहुत से कमल
द्रुमाणाम्	–	पेड़ों का/के /की
गङ्गायाः	–	गंगा का/के/की
तड़ागे	–	तालाब में
तीरे	–	किनारे पर
उद्याने	–	बाग में

जले	–	पानी में
वृक्षेषु	–	पेड़ों पर
पुष्पेषु	–	फूलों पर
द्रुमेषु	–	पेड़ों पर
कमलेषु	–	कमलों पर
गङ्गायाम्	–	गंगा में
निवसन्ति	–	रहते हैं/रहती हैं
विचरन्ति	–	विचरण करते हैं/विचरण करती हैं

अभ्यासः

1. रिक्तस्थानानि पूरयत

अ–	**क.**	**छात्र**	**छात्रस्य**	**छात्राणाम्**
	ख.	नर	________	________
	ग.	अश्व	________	अश्वानाम्
	घ.	उद्यान	________	________
	ङ.	पुस्तक	________	________
ब–	**क.**	**लता**	**लतायाः**	**लतानाम्**
	ख.	शाखा	________	________
	ग.	शोभा	________	________
	घ.	नौका	________	________
	ङ.	गङ्गा	________	________

2.

अ–	**क.**	**छात्र**	**छात्रे**	**छात्रेषु**
	ख.	नर	________	________
	ग.	अश्व	________	________
	घ.	वृक्ष	________	________
	ङ.	पुष्प	________	________

ब– क. लता लतायाम् लतासु
ख. नौका ________ ________
ग. शाखा ________ ________
घ. शोभा ________ ________
ङ. गङ्गा ________ ________

3. मञ्जूषातः अधोलिखितवाक्येषु क्रियापदानि योजयत

क. वयं पाठशालायाम् ________ ।
ख. खगाः आकाशे ________ ।
ग. पुष्पेषु भ्रमराः ________ ।
घ. बालकाः उद्याने ________ ।
ङ. तड़ागे कमलानि ________ ।
च. बालकाः तड़ागे ________ ।

गुञ्जन्ति	विहरन्ति	पठामः	विकसन्ति	तरन्ति	भ्रमन्ति

4. चित्रैः सह वाक्यानि मेलयत

____
____

____
____

____
____

____
____

वाक्यानि
(क) अश्वेषु सैनिकाः ।
(ख) उद्याने बालिकाः क्रीडन्ति ।
(ग) मम हस्ते पुस्तकम् अस्ति ।
(घ) कक्षायां बालकाः पुस्तकानि पठन्ति ।

5. मञ्जूषातः पर्यायवाचिनः शब्दान् चित्वा लिखत

कुसुमानि,	जलाशयः,	उपवनम्,	द्रुमाः,	पङ्कजानि
पुष्पाणि	वृक्षाः	सरोवरः	उद्यानम्	कमलानि

यथा – कुसुमानि – पुष्पाणि

6. मञ्जूषातः प्रश्नवाचकान् शब्दान् चित्वा वाक्यं पूरयत

काः,	कुत्र,	किम्,	कानि

यथा– मृगाः **वनेषु** विचरन्ति ।
मृगाः कुत्र विचरन्ति ?

क. सः **वृक्षे** फलानि पश्यति ।
सः ———————— फलानि पश्यति ?

ख. बालिकाः **उद्यानेषु** भ्रमन्ति ।
बालिकाः ———————— भ्रमन्ति?

ग. तड़ागे **कमलानि** विकसन्ति ।
तड़ागे ———————— विकसन्ति?

घ. गङ्गायां **नौकाः** तरन्ति ।
गङ्गायां ———————— तरन्ति ?

ङ सः **आम्रं** खादति ।

च. ———————— खादति ?

अष्टमः पाठः

लृट्–लकार

गोविन्दः – श्वः रविवारः । किं त्वं विद्यालयं गमिष्यसि ?

गोपालः – मम विद्यालये श्वः उत्सवः अस्ति । अतः अवश्यमेव अहं विद्यालयं गमिष्यामि ।

गोविन्दः – किम् अन्ये अपि बालकाः आगमिष्यन्ति?

गोपालः – न केवलं बालकाः अपितु बालकानां पितृजनाः अपि आगमिष्यन्ति।

गोविन्दः – त्वम् उत्सवे किं किं करिष्यसि?

गोपालः – अहं रमेशः अन्ये च मङ्गलश्लोकं पठिष्यामः ।

गोविन्दः – किं तत्र खेलाः अपि भविष्यन्ति?

गोपालः – आम् । केचन कन्दुकेन क्रीडिष्यन्ति । केचन धावन - प्रतियोगितायां धाविष्यन्ति ।

गोविन्दः – मुख्यः अतिथिः कः आगमिष्यति?

गोपालः – अस्माकं प्रदेशस्य शिक्षा-मन्त्रि - महोदयाः आगमिष्यन्ति, बालकेभ्यः च पुरस्कारं प्रदास्यन्ति। उद्याने वृक्षकाणां रोपणम् अपि करिष्यन्ति।

गोविन्दः – शोभनम् । अन्येषु विद्यालयेषु अपि एतत् सर्वं करणीयम् ।

शब्दार्थाः

श्वः (अव्यय) – आने वाला कल

सर्वम् — सभी
केचन — कुछ
अपितु — बल्कि
केवलम् (अव्यय) — केवल
अन्ये — अन्य लोग
अतिथिः — मेहमान
मुख्यः — प्रमुख
उत्सवः — त्यौहार
पितृजनाः — माता-पिता
खेलाः (बहुत से) — खेल
वन्दनाम् — प्रार्थना को
पुरस्कारम् — इनाम को
बालकेभ्यः — बच्चों को
प्रदेशस्य — राज्य का/के/की
कन्दुकेन — गेंद से
विद्यालये — विद्यालय में
अन्येषु — दूसरों में
धावन - प्रतियोगितायाम् — दौड़ की प्रतियोगिता
गमिष्यामि — जाऊँगा/जाऊँगी
करिष्यसि — करोगे/ करोगी
गमिष्यसि — जाओगे/जाओगी
भविष्यन्ति — होंगे / होंगी
आगमिष्यन्ति — आयेंगे/आयेंगी
करणीयम् — करना चाहिए

अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत

क. क्रीडति – क्रीडिष्यति

ख. पठामि – पठिष्यामि

ग. धावसि – धाविष्यसि

घ. लिखथ – लेखिष्यथ

ङ. पठन्ति – पठिष्यन्ति

च. गच्छामः – गमिष्यामः

छ. वदामः – वदिष्यामः

2. प्रदत्तशब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत

क्रीडिष्यन्ति	क्रीडति	गमिष्यसि	धाविष्यन्ति	लेखिष्यामि

क. सः कन्दुकेन ________________ ।

ख. अहम् श्वः पत्रं ________________ ।

ग. त्वम् श्वः विद्यालयं ________________ ।

घ. बालकाः उद्याने ________________ ।

ङ. अश्वाः प्रतियोगितायां वेगेन ________________ ।

3. श्यामः अद्य निम्नलिखितं कार्यं करोति । सः श्वः अपि तदेव कार्यं करिष्यति । तस्य करणीयं कार्यं लिखत

यथा – श्यामः अद्य समाचार-पत्रं पठति ।
सः श्वः समाचार-पत्रं पठिष्यति ।

क. अजः क्षेत्रे चरति । ________________

ख. सः उद्याने व्यायामं करोति । ________________

ग. सः आपणं गच्छति । ________________

घ. सः सायं देवालयं गच्छति । ________________

ङ. सः रामायणं पठति । ________________

4. रेखाङ्कितशब्दस्य स्थाने केन/ किम् /कुत्र इति प्रश्नवाचकान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्य-निर्माणं कुरुत

यथा –

(अ) बालिकाः कन्दुकेन क्रीडन्ति ।
बालिकाः केन क्रीडन्ति ?

(ब) ते ग्रामं गच्छन्ति ।
ते कुत्र गच्छन्ति ?

क. ताः कलमेन पत्राणि लिखन्ति ।

ख. ते उपवने भ्रमिष्यन्ति ।

ग. सीता वनं गच्छति ।

घ. यूयं रथेन नगरं गच्छथ ।

ङ. वयं श्वः आपणं गमिष्यामः ।

च. छात्रा फलं खादति ।

5. मञ्जूषातः शब्दान् चित्वा वार्त्तालापं पूरयत

द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यामि	गमिष्यसि
गमिष्यामि	पतन्ति	वसति

महेशः – सुरेश! किं त्वं ग्रीष्मावकाशे जयपुरं ———————— ।

सुरेशः – आम्, महेश ! अहं जयपुरम् एव ———————— ।

महेशः – तत्र त्वं किं किं ———————— ?

सुरेशः – तत्र अहं सुप्रसिद्धं हवामहल इति स्थानं ———————— । त्वं कुत्र ———————— ?

महेशः – अहं तु हिमाचलप्रदेशं ———————— ।

सुरेशः – शोभनम्! तत्र तु बहवः निर्झराः ———————— ।

महेशः – मम मातुलः तत्र ———————— । अहं विजयदशमी-समारोहं तत्र ———————— ।

नवमः पाठः

पञ्चमीप्रयोगः

मोहनः प्रातः गृहात् विद्यालयं गच्छति । सः तत्र अवधानेन पाठं पठति । सः सायं विद्यालयात् गृहम् आगच्छति । मार्गे तस्य मित्रस्य उद्यानम् अस्ति । सः मित्रेण सह वृक्षात् फलानि त्रोटयति । सः फलानि गृहम् आनयति । वृक्षेभ्यः पत्राणि पतन्ति।

मोहनस्य पिता विद्यालयस्य वृत्तान्तं पृच्छति । मोहनः विद्यालयस्य वृत्तान्तं कथयति ।

मोहनस्य माता कथां कथयति । मोहनस्य पिता स्तोत्रं गायति । तस्य भ्राता ग्रामात् दुग्धम् आनयति । मोहनस्य पिता प्रातः गृहात् बहिः गच्छति । सः सायम् आपणात् आम्राणि आनयति। सर्वे विनोदेन कालं नयन्ति ।

शब्दार्थाः

मार्गे	–	रास्ते में
तस्य	–	उसका/उसकी/उसके
मित्रस्य	–	दोस्त का/के /की
मित्रेण सह	–	दोस्त के साथ
वृक्षात्	–	पेड़ से (अलग होने में)
मित्रेण	–	दोस्त से
वृक्षेभ्यः	–	पेड़ों से

आपणात्	—	बाजार से
ग्रामात्	—	गाँव से (अलग होने में)
गृहात्	—	घर से (अलग होने में)
दूरम्	—	दूर
बहिः	—	बाहर
सर्वे	—	सभी
वृत्तान्तम्	—	हाल-चाल
कथाम्	—	कहानी को
दुग्धम्	—	दूध को
अवधानेन	—	ध्यान से
विनोदेन	—	आनन्द से
त्रोटयति	—	तोड़ता है/तोड़ती है
आनयति	—	लाता है / लाती है
आगच्छति	—	आता है/आती है
पृच्छति	—	पूछता है/ पूछती है
कथयति	—	कहता है/ कहती है

अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत

क.	कन्दुक	कन्दुकात्	कन्दुकेभ्यः
	मोदक	मोदकात्	मोदकेभ्यः
	देवालय	देवालयात्	देवालयेभ्यः
	रजक	रजकात्	रजकेभ्यः
ख.	चित्रम्	चित्रात्	चित्रेभ्यः
	पुष्प	पुष्पात्	पुष्पेभ्यः
	गृह	गृहात्	गृहेभ्यः
	आम्र	आम्रात्	आम्रेभ्यः

ग.	रमा	रमायाः	रमाभ्यः
	माला	मालायाः	मालाभ्यः
	ग्रीवा	ग्रीवायाः	ग्रीवाभ्यः
	नासिका	नासिकायाः	नासिकाभ्यः

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

यथा – मोहनः गृहे अवधानेन किं पठति?
मोहनः गृहे अवधानेन पाठं पठति ।

क. मार्गे मोहनः वृक्षात् किं त्रोटयति?

____

ख. मोहनस्य पिता किं पृच्छति ?

____

ग. मोहनस्य माता किं कथयति?

____

घ. मोहनस्य पिता किं गायति ?

____

ङ. मोहनस्य भ्राता कुतः दुग्धम् आनयति?

____

3. उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत
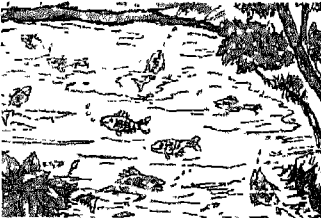
मत्स्यः ———— बहिः
न आगच्छति । (तड़ाग)
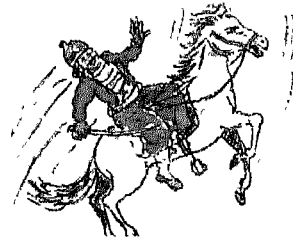
नरः ———— पतति ।
(अश्व)

सर्पः ——— निर्गच्छति । (बिल) पत्राणि ——— पतन्ति । (वृक्ष)
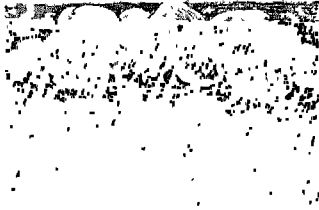
जलं ——— पतति । (मेघ)

4. उचितशब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत

क. मोहनः ——————— दुग्धम् आनयति । (ग्रामात्/ग्रामेण)

ख. नदी ——————— निर्गच्छति । (पर्वतम्/पर्वतात्)

ग. बालकाः ——————— गृहम् आगच्छन्ति । (आपणात्/आपणेन)

घ. कृषकः ——————— कर्षति (क्षेत्रात्/ क्षेत्रम्)

ङ. बालिका ——————— गृहम् अलङ्करोति (मालायाः/मालाभिः)

5. उपयुक्त-सहायकशब्दैः शृंङ्खला पूरयत

गृहात्, आपणात्, दुग्धात्, विद्यालयात्

मोहनः ——— विद्यालयं गच्छति । ——— गृहम् आगच्छति । ——— आपणं गच्छति। ——— दुग्धम् आनयति । ——— नवनीतं प्राप्नोति ।

6. बालकः किम् वस्तु कुतः आनयति इति लिखत

पुस्तकालयात्, ग्रामात्, मालाकारात्, आपणात्

क. ———————— फलानि आनयति।

ख. ———————— पुस्तकानि आनयति।

ग. ———————— दुग्धम् आनयति।

घ. ———————— पुष्पाणि आनयति।

दशमः पाठः

चतुर्थीप्रयोग.

एषः देवालयः ।
अत्र के आगच्छन्ति?
अत्र जनाः आगच्छन्ति ।
जनाः अत्र किं कुर्वन्ति ?
जनाः अत्र देवेभ्यः पुष्पाणि अर्पयन्ति ।
कथयन्ति च - सर्वेभ्यः देवेभ्यः नमः, ईश्वराय नमः इति ।
बालिकाः किमर्थं पुष्पाणि आनयन्ति ?
बालिकाः पूजायै पुष्पाणि आनयन्ति ।
पिता केभ्यः क्रीडनकानि आनयति ?
पिता बालेभ्यः क्रीडनकानि आनयति ।
धनिकः केभ्यः धनं ददाति?
धनिकः निर्धनेभ्यः धनं ददाति ।
शिक्षकः केभ्यः शिक्षां ददाति ?
शिक्षकः शिष्येभ्यः शिक्षां ददाति ।
दीपकः प्रकाशाय भवति ।
धनम् दानाय भवति ।
सज्जनाः परोपकाराय जीवन्ति ।
परोपकारः पुण्याय भवति ।

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम् ॥

शब्दार्थाः

परपीडनम्	–	दूसरे को कष्ट देना
किमर्थम्	–	किसलिए
जनाः	–	बहुत से आदमी
देवालयः	–	मन्दिर
अष्टादश	–	अठारह
वचनद्वयम्	–	दो बातें
क्रीडनकानि	–	खिलौने
व्यासस्य	–	व्यासमुनि का/के/की
पुराणेषु	–	पुराणों में
केभ्यः	–	किनके लिए
परोपकाराय	–	भलाई के लिए
ईश्वराय	–	भगवान् के लिए
देवेभ्यः	–	देवताओं के लिए
निर्धनेभ्यः	–	गरीबों के लिए
पूजायै	–	पूजा के लिए
ददाति	–	देता है/देती है
आनयन्ति	–	लाते हैं/लाती हैं
कथयन्ति	–	कहते हैं/कहती हैं
अर्पयन्ति	–	अर्पण करते हैं/करती हैं

अभ्यासः

1. उच्चारयत

(अ)	देव	देवाय	देवेभ्यः
	ईश्वर	ईश्वराय	ईश्वरेभ्यः

दान	दानाय	दानेभ्यः
प्रकाश	प्रकाशाय	प्रकाशेभ्यः
परोपकार	परोपकाराय	परोपकारेभ्यः
लता	लतायै	लताभ्यः
बालिका	बालिकायै	बालिकाभ्यः
पूजा	पूजायै	पूजाभ्यः
छात्रा	छात्रायै	छात्राभ्यः
विद्या	विद्यायै	विद्याभ्यः

(ब) ईश्वराय नमः ।
देवाय नमः ।
सूर्याय नमः ।
देवेभ्यः नमः ।
गुरुभ्यः नमः ।

2. उचित-विभक्ति-प्रयोगेण रिक्तस्थानम् पूरयत

यथा – जनाः पूजनाय आगच्छन्ति । (पूजन)

क. दीपकः —————— भवति । (प्रकाश)
ख. धनम् ———— भवति । (दान)
ग. परोपकारः ———— भवति । (पुण्य)
घ. ———— नमः । (ईश्वर)
ङ. ———— नमः । (देव)

3. उचितमेलनं कुरुत

दीपकः	–	पुण्याय
परोपकारः	–	खेलनाय
क्रीडनकम्	–	दानाय
चित्रम्	–	प्रकाशाय
धनम्	–	दर्शनाय

4. प्रश्नानाम् उत्तरेषु रिक्तस्थानानि पूरयत

क. बालिकाः किमर्थं पुष्पाणि आनयन्ति?
बालिकाः ———————— पुष्पाणि आनयन्ति ।

ख. कस्मै नमः ?
———————— नमः ।

ग. पिता कस्मै पुस्तकं ददाति?
पिता ———————— पुस्तकं ददाति ।

घ. माता कस्यै क्रीडनकं ददाति ?
माता ———————— क्रीडनकं ददाति ।

ङ. अध्यापिका काभ्यः पारितोषिकं वितरति?
अध्यापिका ———————— पारतोषिकं वितरति।

5. कोष्ठकात् उचितशब्दप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत

क. मोहनः पत्रं ———————— । (लिखसि/लिखति)
ख. जनकः ———————— मोदकानि ददाति। (बालकाय/ बालकान्)
ग. सा पुष्पाणि ———————— । (आनयन्ति/आनयति)
घ. ———————— भोजनं खादति । (त्वम्/सः)
ङ. छात्रः ———————— जलम् आनयति। (अध्यापकाय/ अध्यापकम्)
च. रामः ———————— पुस्तकं यच्छति । (मोहनम्/मोहनाय)

एकादशः पाठः

समुद्रस्य तटः

तृतीयाप्रयोग

एषः समुद्रस्य तटः । पीयूषः अत्र मित्रैः सह क्रीडति । सः बालुकाभिः गृहं रचयति । केचन कन्दुकेन क्रीडन्ति । ते पादेन कन्दुकं क्षिपन्ति । केचन नराः अश्वम् आरोहन्ति । अश्वाः मालाभिः भूषिताः सन्ति । तटे समुद्रस्य तरङ्गाः अतिवेगेन आगच्छन्ति । ते तरङ्गाः बालुकानां गृहाणि पातयन्ति। तरङ्गैः सह तटे शङ्खाः आपतन्ति। बालकाः शङ्खानां सञ्चयं कुर्वन्ति । सुरेशः समुद्रे तरति । तेन सह दिनेशः अपि स्नाति ।

समुद्रे नौकाः अपि सन्ति । धीवराः नौकाभिः समुद्रं गच्छन्ति । पीयूषः अपि स्वमित्रेण सह नौकया समुद्रे विहरति । समुद्रतटात् सः द्विचक्रिकया गृहम्

आगच्छति, श्लोकं च गायति –

दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन, स्नानेन शुद्धिर्न तु चन्दनेन ।
मानेन तृप्तिर्न तु भोजनेन, ज्ञानेन मुक्तिर्न तु मुण्डनेन ।।

शब्दार्थाः

सह (अव्यय) – साथ
स्व – अपना/ अपने
शङ्खाः – बहुत से शंख
धीवराः – बहुत से मल्लाह
तटः – किनारा
पाणिः – एक हाथ
मुक्तिः – मोक्ष
भूषिताः – विभूषित, अलंकृत
तरङ्गाः – लहरें
गृहाणि – बहुत से घर
मानेन – प्रतिष्ठा से
कङ्कणेन – कंगन से
दानेन – दान से
पादेन – एक पैर से
अतिवेगेन – बहुत तेजी से
नौकया – एक नौका से/नाव से
द्विचक्रिकया – एक साईकिल से
बालुकाभिः – रेतों से
समुद्रस्य – समुद्र का/के/की
शङ्खानाम् – शंङ्खों का/के/की

तटे	–	किनारे पर
समुद्रे	–	समुद्र में
रचयति	–	बनाता है/बनाती है
आरोहन्ति	–	चढ़ते हैं/चढ़ती हैं
क्षिपन्ति	–	फेंकते हैं/फेंकती हैं
पातयन्ति	–	गिराते हैं/गिराती हैं
आपतन्ति	–	आकर गिरते हैं/गिरती हैं
तरङ्गैः सह	–	लहरों के साथ
सञ्चयम्	–	सङ्ग्रह
मुण्डनेन	–	मुण्डन से

अभ्यासः

1. शब्दान् उच्चारयत

क.	अश्व	अश्वेन	अश्वैः
	तरङ्ग	तरङ्गेण	तरङ्गैः
	समुद्र	समुद्रेण	समुद्रैः
	मेघ	मेघेन	मेघैः
	गज	गजेन	गजैः
ख.	मित्र	मित्रेण	मित्रैः
	कन्दुक	कन्दुकेन	कन्दुकैः
	फल	फलेन	फलैः
	जल	जलेन	जलैः
	नवनीत	नवनीतेन	नवनीतैः
	कुसुम	कुसुमेन	कुसुमैः
ग.	माला	मालया	मालाभिः
	नौका	नौकया	नौकाभिः

बालुका	बालुकया	बालुकाभिः
द्विचक्रिका	द्विचक्रिकया	द्विचक्रिकाभिः
प्रभा	प्रभया	प्रभाभिः

2. तृतीयाविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत

यथा – पीयूषः मित्रेण सह समुद्रतटं गच्छति । (मित्र)

क. तत्र सः —————— क्रीडति । (कन्दुक)

ख. सः —————— गृहं रचयति । (बालुका)

ग. जनाः समुद्रे ——————विहरन्ति । (नौका)

घ. बालिकाः —————— मालाः रचयन्ति । (कुसुम)

ङ. अहम् अपि —————— सह श्वः गमिष्यामि । (मोहन)

3. अधोलिखितवाक्येषु तृतीयान्तशब्दान् रेखाङ्कितान् कुरुत

यथा – आकाशः मेघैः परिपूर्णः ।

क. तड़ागः कमलैः विभाति ।

ख. सः छात्रैः सह उपवने क्रीडति ।

ग. माता बालिकया सह आपणं गच्छति ।

घ. वृक्षः लताभिः परिवृतः ।

ड. अहम् द्विचक्रिकया विद्यालयं गच्छामि ।

4. अधोलिखितैः शब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत

अश्वेन, अश्वः, अश्वाय, अश्वम्, अश्वात्, अश्वस्य

एषः मम —————— । मम ———— वर्णः कृष्णः । अहम् ———— घासं यच्छामि । अहम् ————प्रातः समुद्रतटे विहरामि । अहम् ——— आरोहामि। अहम् —————— न पतामि ।

5. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

क. पीयूषः कैः सह समुद्रतटं गच्छति?

ख. अश्वाः काभिः भूषिताः सन्ति?

ग. दिनेशः केन सह समुद्रे तरति?

घ. धीवराः काभिः समुद्रं गच्छन्ति?

ङ. पीयूषः कया समुद्रतटात् गृहम् आगच्छति?

6. रेखाङ्कितशब्दान् आश्रित्य प्रश्नवाचकवाक्यानि लिखत

क. बालिकाः कन्दुकेन क्रीडन्ति ।

______________________________?

ख. ताः कलमेन पत्राणि लिखन्ति ।

______________________________?

ग. ते ग्रामं गच्छन्ति ।

______________________________?

घ. सीता रामेण सह वनं गच्छति ।

______________________________?

ङ. यूयं रथेन नगरं गच्छथ ।

______________________________?

द्वादशः पाठः

प्रातराशः

लोट्-लकार-प्रयोगः

माता – गोविन्द ! पुत्र ! किं करोषि?

गोविन्दः – मातः ! मोहनेन सह क्रीडामि ।

माता – तव अग्रजः सुकान्तः किं करोति?

गोविन्दः – सः तु पठति ।

माता – अलं क्रीडया । त्वम् अत्र आगच्छ, अग्रजं सुकान्तम्, अनुजं सुव्रतम् अपि आनय ।

गोविन्दः – यथा आदिशति माता । वयं सर्वे एव आगच्छामः ।

माता – शीघ्रम् आगच्छत । गोविन्द ! अस्मिन् आसने त्वम् उपविश। एतत् आसनं तव अनुजाय सुव्रताय । सः अत्र उपविशतु । तत् च आसनं तव अग्रजाय सुकान्ताय । सः तत्र उपविशतु । सर्वे यथास्थानम् उपविशन्तु ।

गोविन्दः – मातः ! अद्य प्रातराशे किं खादिष्यामः?

माता – उष्णं दुग्धम् अस्ति । दुग्धं पिबत ।

गोविन्दः – दुग्धम्?

माता – आम्, दुग्धम् । दुग्धम् शरीरस्य पोषणाय । आम्राणि अपि सन्ति । आम्राणि खादत । रसपूर्णाः कुण्डलिकाः अपि सन्ति । ताः खादत।

सर्वे – अहो ! शीघ्रं परिवेशयतु माता ।

शब्दार्थाः

अनुजः	–	छोटा भाई
अग्रजः	–	बड़ा भाई
कुण्डलिकाः	–	जलेबियाँ
शीघ्रम् (अव्यय)	–	जल्दी
यथास्थानम् (अव्यय)	–	उचित स्थान पर
अलम् (अव्यय)	–	पर्याप्त, बेकार
उष्णम्	–	गर्म
पोषणाय	–	पोषण के लिए
अग्रजाय	–	बड़े भाई के लिए
अनुजाय	–	छोटे भाई के लिए
आदिशति	–	आदेश देता है / आदेश देती है
क्रीडामि	–	खेलता हूँ/खेलती हूँ
आनय	–	लाओ
परिवेशयतु	–	परोसें
उपविशतु	–	बैठो
उपविशन्तु	–	सभी बैठो
आगच्छ	–	आओ
प्रातराशे	–	जलपान में
अस्मिन् आसने	–	इस आसन पर

अभ्यासः

1. उच्चारयत

(अ) पठ्ति	पठतु	पठन्तु
क्रीड्	क्रीडतु	क्रीडन्तु

धाव्	धावतु	धावन्तु
उपविश्	उपविशतु	उपविशन्तु
खाद्	खादतु	खादन्तु
(ब) पठ्	पठ	पठत
क्रीड्	क्रीड	क्रीडत
धाव्	धाव	धावत
उपविश्	उपविश	उपविशत
खाद्	खाद	खादत

(स) अलं विवादेन ।
अलं कोलाहलेन ।
अलं हसितेन ।
अलं विषादेन ।
अलं चिन्तया ।
अलं क्रीडया ।

2. अधोलिखितशब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयत

कुरुत	पठत	कोलाहलेन	पठन्ति	वदत	पश्यत

आचार्यः – बालकाः! एषः पुस्तकालयः । उच्चैः मा ——————।
कोलाहलं मा ——————। मौनेन ——————। तत्र दूरदर्शनम्।
ये छात्राः पठन्ति ते ध्यानेन ——————।

3. वाटिकाविषये अधोलिखितेषु निर्देशेषु उपयुक्तम् (✓) /अनुपयुक्तम् (×) इति चिह्नेन सङ्केतयत

यथा – पुष्पाणि मा त्रोटयत । (✓)
तृणेषु चलत । (×)

क. वृक्षान् आरोहत । [ ]

ख. मार्गेण चलत ।

ग. पुष्पाणि मा स्पृशत ।

घ. वृक्षेषु स्वनाम लिखत ।

ङ. तित्तिलिकानाम् ग्रहणं मा कुरुत ।

4. उचितशब्देन रिक्तस्थानानि पूरयत

क. बालकाः ——————— सह धावन्ति । (बालकैः/बालकेभ्यः)
ख. ——————— चित्राणि पश्यन्ति । (वयम्/ते)
ग. सः ——————— पाठशालां गच्छति । (पठने/पठनाय)
घ. अश्वः ——————— धावति । (पादेन/ पादैः)
ङ. अलं ——————— । (क्रीडया/ क्रीडायाः)

5. उचित-क्रियापदं मेलयत

क	**ख**
दुग्धम्	पश्यत
पत्रम्	पठत
चित्रम्	खादत
फलानि	पिबत
पुस्तकानि	लिखत

6. अधोलिखित-वार्तालापे आदेशात्मकशब्दान् रेखाङ्कितान् कुरुत

माता – हे वत्स ! एतत् उद्यानम् । अत्र स्वमित्रैः सह भ्रमणम् कुरु । उचितमार्गे एव चल।

वत्सः – आम्, मातः! अत्र सुन्दराणि पुष्पाणि अपि सन्ति । किं वयं पुष्पाणि त्रोटयाम?

माता – न, वत्साः! इमानि पुष्पाणि मा त्रोटयत । अत्र उपविशत। पुष्पाणां वर्णान् पश्यत ।

त्रयोदशः पाठः

नीतिनवनीतम्

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥ 1 ॥
यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत् ।
एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति ॥ 2 ॥
हस्तस्य भूषणं दानम्, सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रम्, भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥ 3 ॥
नमन्ति फलिनो वृक्षाः, नमन्ति गुणिनो जनाः ।
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च, न नमन्ति कदाचन ॥ 4 ॥
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥ 5 ॥

शब्दार्थाः

उद्यमेन – परिश्रम से
सिध्यन्ति – पूरे होते हैं/ होती है
सुप्तस्य – सोये हुए का/के/की
प्रविशन्ति – प्रवेश करते हैं/करती हैं

चक्रेण	–	एक पहिये से
रथस्य	–	रथ का/के/की
दैवम्	–	भाग्य
गतिः	–	चाल
भूषणम्	–	आभूषण, गहना
कण्ठस्य	–	गले का
नमन्ति	–	नम्र बन जाते हैं/ जाती हैं
फलिनः	–	फलवाले, फलयुक्त
गुणिनः	–	गुणी जन
शुष्कः	–	सूखा हुआ
कदाचन	–	कभी भी
भवन्तु	–	हों
निरामयाः	–	नीरोग
पश्यन्तु	–	देखें
मा	–	मत
कश्चित्	–	कोई
भवेत्	–	हो, होना चाहिए
दुःखभाग्	–	दुखी

अभ्यासः

1. **सङ्कलितान् श्लोकान् सस्वरं पठत ।**
2. **श्लोकेषु रिक्तस्थानानि पूरयत**

   क. यथा ह्येकेन चक्रेण न ———————— गतिर्भवेत् ।
   एवं पुरुषकारेण ———————— दैवं ————————सिध्यति ।।

   ख. ———————— भूषणं दानम् सत्यं ———————— भूषणम् ।
   श्रोत्रस्य भूषणं ———————— भूषणैः ———————— प्रयोजनम् ।।

3. श्लोकांशान् मेलयत

क	ख
उद्यमेन हि सिध्यन्ति	सत्यं कण्ठस्य भूषणम्
नहि सुप्तस्य सिंहस्य	कार्याणि न मनोरथैः
हस्तस्य भूषणं दानम्	न नमन्ति कदाचन
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रम्	प्रविशन्ति मुखे मृगाः
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च	भूषणैः किं प्रयोजनम्

4. अधोलिखितेषु शुद्धवाक्यानां समक्षम् 'आम्' अशुद्धवाक्यानां समक्षम् 'न' इति लिखत

यथा –उद्यमेन कार्याणि सिध्यन्ति । [आम्]

हस्तस्य भूषणं सत्यम् । [न]

क. पुरुषकारेण दैवं सिध्यति । [ ]

ख. सुप्तस्य सिंहस्य मुखे मृगाः स्वयं प्रविशन्ति । [ ]

ग. एकेन चक्रेण रथस्य गतिर्न भवति । [ ]

घ. मनोरथैः कार्याणि न सिध्यन्ति । [ ]

ङ. सर्वे भद्राणि पश्यन्तु । [ ]

5. अधोलिखित – प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

क. कार्याणि केन सिध्यन्ति ? ____________________

ख. एकेन चक्रेण कस्य गतिः न भवेत् ? ____________________

ग. कस्य भूषणं सत्यम्? ____________________

घ. के के नमन्ति? ____________________

ङ. के के न नमन्ति? ____________________

चतुर्दशः [illegible]

जन्तुशाला

रामः – रहीम ! ह्यः त्वं कुत्र अगच्छः ?

रहीमः – अहं जन्तुशालाम् अगच्छम् ।
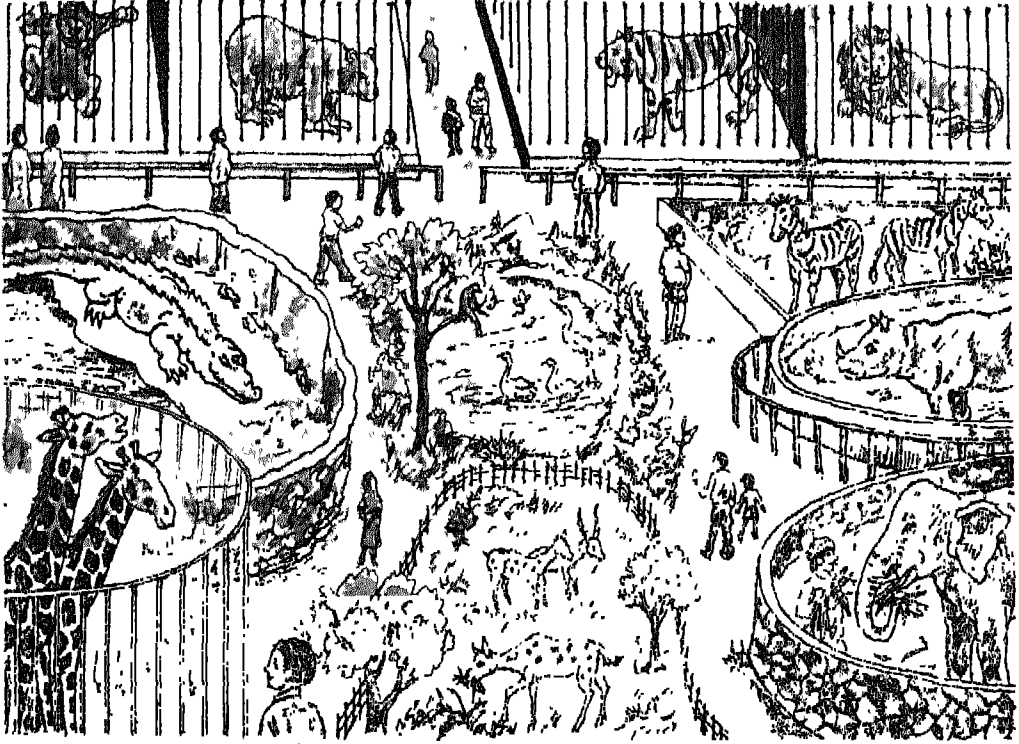
रामः – त्वं केन सह तत्र अगच्छः?

रहीमः – अहं राकेशेन सह तत्र अगच्छम् ।

रामः – किं तव भ्राता अपि त्वया सह तत्र अगच्छत्।

रहीमः – आम्, मम भ्राता अपि मया सह तत्र अगच्छत् ।

रामः – यूयं सर्वे केन यानेन अगच्छत?

रहीमः – वयं मोटर-यानेन तत्र अगच्छाम ।

रामः – जन्तुशालायां यूयं किम् अपश्यत?

रहीमः – वयं तत्र देशविदेशानाम् अनेकान् पशून्, खगान्, जलचरान् च अपश्याम। जन्तुशालायां वानराः, सिंहाः, गजाः, मृगाः, जलहस्ती, भल्लूकादयः, पशवः आसन् । तत्र एका सिंही अपि आसीत्। तस्याः शावकाः तत्र अक्रीडन् । तत्र तड़ागे वयं मकरान् अपि अपश्याम।

रामः – ततः यूयं किम् अकुरुत?

रहीमः – तदा वयं सर्वे अति श्रान्ताः । वयं जलपानगृहम् अगच्छाम, तत्र च वयं शीतलं पेयम् अपिबाम । पश्चात् वयं मोटरयानेन स्वगृहं प्रत्यागच्छाम ।

शब्दार्थाः

ह्यः (अव्यय)	–	बीता हुआ कल
जन्तुशाला	–	चिड़ियाघर
सिंही	–	शेरनी
अनेकान् पशून्	–	अनेक जानवरों को
मोटर-यानेन	–	मोटर गाड़ी से
गजाः	–	बहुत से हाथी
श्रान्ताः	–	थके हुए/ थकी हुई
मकरः	–	मगरमच्छ
शीतलं पेयम्	–	ठण्डा पेय
मया	–	मेरे साथ

त्वया सह	–	तुम्हारे साथ
केन सह	–	किसके साथ
अगच्छत्	–	गया/गई
अपश्यत	–	तुम लोगों ने देखा
अकुरुत	–	तुम लोगों ने किया
अगच्छः	–	गया/गई
आसीत्	–	था/थी
आसन्	–	थे/थीं
अगच्छम्	–	गया/गई
अपश्याम	–	हमने देखा/ देखीं
प्रत्यागच्छाम	–	वापस लौट आए

अभ्यासः

1. उच्चारयत

अस्ति	–	आसीत्
वसति	–	अवसत्
भवति	–	अभवत्
वदति	–	अवदत्
करोति	–	अकरोत्
चिन्तयति	–	अचिन्तयत्
पश्यति	–	अपश्यत्
पचति	–	अपचत्
गच्छति	–	अगच्छत्
क्रीडति	–	अक्रीडत्
पिबति	–	अपिबत्
नयति	–	अनयत्

2. कोष्ठकात् उचितम् शब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत

क. बालाः पठनाय पाठशालाम् ———————— । (अगच्छः/अगच्छन्)

ख. पिता पुत्राय मोदकानि ———————— । (आनयन्/ आनयत्)

ग. ते दुग्धम् ———————— । (अपिबत्/अपिबन्)

घ. किं त्वं मोदकम् ———————— ? (अखादत्/अखादः)

ङ. यूयं दुग्धम् ———————— । (अपिबत/अपिबम्)

च. अहम् उद्यानम् ———————— । (अगच्छः / अगच्छम्)

छ. वयं चित्राणि ———————— । (अपश्यत्/ अपश्याम)

3. चित्राणाम् अधः तेषां संस्कृतनामानि लिखत

———————— ।

———————— ।

———————— ।

———————— ।

———————— ।
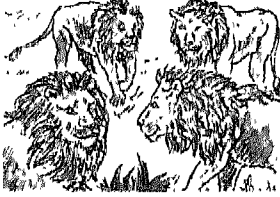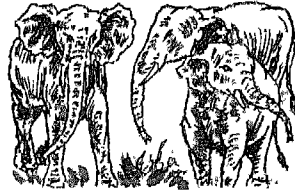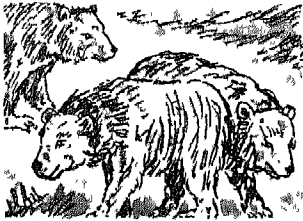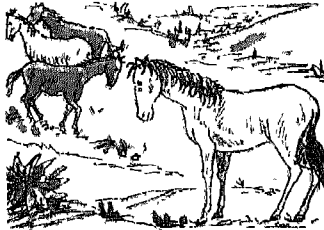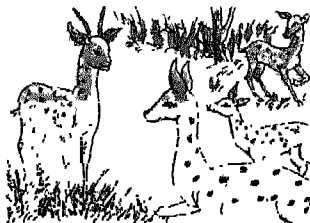
4. मञ्जूषायां पशूनां पक्षिणां च नामानि सन्ति । तानि पृथक् कृत्वा भिन्नस्तम्भे लिखत

जलहस्ती	मकरः	कोकिला	बकः	सिंहः
शुकः	भल्लूकः	कपोतः	मयूरः	व्याघ्रः

पशवः	**पक्षिणः**
____________	____________
____________	____________
____________	____________
____________	____________
____________	____________

5. त्वं जन्तुशालायां किं किम् अपश्यः? पञ्चवाक्येषु लिखत

यथा – अहं जन्तुशालायाम् सिंहान् अपश्यम् ।

क. अहम् ________________ ।

ख. ________________ अपश्यम् ।

ग. ______________ जन्तुशालायाम् ______________ ।

घ. अहम् ________________ ।

ङ. अहम् तड़ागे ________________ ।

पञ्चदशः पाठः

मूर्खवानरकथा

लट्-लङ्लकार-पुनरभ्यासः

नर्मदातीरे एकः वृक्षः आसीत् । तत्र स्वपरिश्रमेण निर्मितेषु नीडेषु खगाः सुखेन वसन्ति स्म । तत्र वृक्षतले कश्चित् वानरः अपि वसति स्म । एकदा महती वृष्टिः अभवत् । सः वानरः वृष्टिजलेन अतीव आर्द्रः कम्पितः च अभवत्। खगाः शीतेन कम्पमानं वानरम् अवदन् – भो वानर ! त्वं कष्टम् अनुभवसि । तत् कथं गृहस्य निर्माणं न करोषि ! यदा सः वानरः एतत् अश्रृणोत् तदा सः अचिन्तयत्– अहो ! एते क्षुद्राः खगाः मां निन्दन्ति । सः वानरः खगानां नीडानि वृक्षात् अधः अपातयत् । खगानां नीडैः सह तेषाम् अण्डानि अपि नष्टानि । सत्यम् एव उक्तम् –

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।

शब्दार्थाः

निर्मितेषु नीडेषु	–	बनाए हुए घोसलों में
वसन्ति स्म	–	रहते थे/रहती थीं
वृक्षतले	–	पेड़ के नीचे
वसति स्म	–	रहता था/रहती थी
एकदा	–	एक समय
वृष्टिः	–	वर्षा, बारिश
आर्द्रः	–	गीला
कम्पितः	–	काँप गया
क्षुद्राः खगाः	–	छोटे पक्षी
अधः(अव्यय)	–	नीचे
निन्दन्ति	–	निन्दा करते हैं/निन्दा करती हैं
अशृणोत्	–	सुना/सुनी
माम्	–	मुझे/मुझको
अपातयत्	–	गिराया/गिरायी
तेषाम्	–	उनका/उनकी/उनके
अचिन्तयत्	–	सोचा/सोची
उक्तम्	–	कहा गया है

अभ्यासः

1. चित्रं दृष्ट्वा वाक्यनिर्माणं कुरुत

यथा – वाटिकायाम् अनेके वृक्षाः सन्ति ।

____

____

____

____
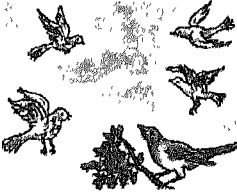
2. शब्द-प्रयोगेण कथां पूरयत

नर्मदातीरे एकः ____________ आसीत् । तत्र नीडेषु ____________ सुखेन ____________ । तत्र वृक्षतले कश्चित् ____________अपि ____________।
एकदा महती ____________ अभवत् । सः वानरः ____________ आर्द्रः ——— अवदन् ____________ ! कथं गृहस्य निर्माणम् न____________।
____________ अचिन्तयत् ——— अहो ! एते क्षुद्राः ———— मां निन्दन्ति इति चिन्तयन् सः खगानां ____________ वृक्षात् ____________ अपातयत्।
____________नीडैः ____________तेषाम् ____________ अपि नष्टानि ।

3. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

यथा – प्र. वृक्षः कुत्र आसीत्?

उ. वृक्षः नर्मदातीरे आसीत् ।

क. खगाः कुत्र वसन्ति स्म?

ख. वानरः कुत्र वसति स्म?

ग. वानरः केन कम्पितः अभवत्?

घ. खगाः वानरं किम् अवदन्?

ङ. वानरः किम् अकरोत् ?

4. प्रश्नवाचकशब्दान् नियुज्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत

क. नर्मदातीरे एकः वृक्षः आसीत् ।

यथा – नर्मदातीरे <u>कः</u> आसीत् ?

ख. नीडेषु **खगाः** वसन्ति स्म ।

नीडेषु ———————— वसन्ति स्म?

ग. **वानरः** वृष्टिजलेन आर्द्रः कम्पितः च अभवत् ।

———————— वृष्टिजलेन आर्द्रः कम्पितः च अभवत्?

घ. वानरः **खगानां** नीडानि वृक्षात् अधः अपातयत् ।

वानरः ———————— नीडानि वृक्षात् अधः अपातयत्?

ङ. खगानाम् **अण्डानि** नष्टानि ।

खगानां ———————— नष्टानि?

5. शुद्धकथनस्य समक्षम् 'आम्' अशुद्धकथनस्य समक्षं 'न' इति लिखत

यथा– नीडेषु खगाः सुखेन निवसन्ति स्म । [आम्]

वृक्षतले कश्चित् भल्लूकः वसति स्म । [न]

क. वानरः शीतेन व्याकुलः आसीत् । [ ]

ख. वानरः अचिन्तयत्-एते क्षुद्रखगाः मां प्रशंसन्ति । [ ]

ग. वानरः खगानां नीडानि वृक्षात् अधः अपातयत् । [ ]

घ. मूर्खेभ्यः उपदेशः न दातव्यः । [ ]

ङ. खगानां नीडेषु अण्डानि न आसन् । [ ]

षोडशः पाठः

यमुना विषरहिता जाता

क्त्वा, ल्यप् प्रत्ययः

एकदा षड्वर्षीयः श्रीकृष्णः वृन्दावने यमुनातटम् अगच्छत् । गोपाः अपि तेन सह अगच्छन् । गोपाः पिपासया आकुलाः भूत्वा यमुनाजलम् अपिबन् । ते मूर्च्छिताः अभवन्। श्रीकृष्णः तान् मूर्च्छितान् दृष्ट्वा व्याकुलः अभवत्। वस्तुतः यमुनाजले कालियनागस्य कुण्डम् आसीत् । तेन यमुनाजलं विषज्वालाभिः विषाक्तं जातम्। अनेके खगाः पशवः च तत् जलं पीत्वा मृत्युं प्राप्ताः । वायुः अपि तेन विषयुक्तः अभवत् । वृक्षाः तेन वायुना शुष्काः जाताः।

यदा श्रीकृष्णः एतत् सर्वम् अपश्यत् सः एकं वृक्षम् आरोहत् । तस्मात् वृक्षात् सः विषयुक्ते जले न्यपतत् । कालियनागस्य एकाधिकशतं फणाः आसन्। सः तान् प्रसार्य कृष्णं प्रहर्तुम् ऐच्छत् । श्रीकृष्णः तस्य फणान् आरुह्य अनृत्यत्। कालियनागस्य फणाः शनैः शनैः छिन्नाः भिन्नाः अभवन् । मुखात् रक्तं प्रावहत्। सः हस्तौ संयोज्य अवदत् – 'भगवन् ! वयं नागाः जन्मतः एव विषयुक्ताः।

अयं न मम अपराधः । भवान् एव सर्वप्राणिनां प्रभुः । अनुग्रहं करोतु निग्रहं वा। एवं निग्रहात् परम् अनुग्रहं कुर्वन् श्रीकृष्णः अवदत्–रे दुष्ट ! किं न जानासि त्वं यत् तव कारणात् सर्वं जलं विषयुक्तं भवति । इतः कुत्रापि अन्यत्र गच्छ इति। सर्पः ततः पलायितः। एवं यमुना च विषरहिता जाता।

शब्दार्थाः

षड्वर्षीयः – छः वर्ष की आयु वाला
तटम् – किनारा
गोपाः – ग्वाले
पिपासया – प्यास से
कुण्डम् – कुण्ड
विषज्वालाभिः – विष की ज्वाला से
शुष्काःजाताः – सूख गए
यदा – जब
आरोहत् – चढ़ गया/गई
न्यपतत् – कूद गया/नीचे गिर गया
एकाधिकशतम् – एक सौ एक
प्रसार्य – फैलाकर
प्रहर्त्तुम् – प्रहार (मारने) के लिए
ऐच्छत् – इच्छा की
आरुह्य – चढ़कर
अनृत्यत् – नाचने लगा
शनैःशनैः – धीरे-धीरे
रक्तम् – खून
प्रावहत् – बहने लगा
जन्मतः – जन्म से

अनुग्रहम् – कृपा
निग्रहम् – दण्ड
कुर्वन् – करता हुआ
इतः – यहाँ से
ततः – वहाँ से
पलायितः – भाग गया

अभ्यासः

1. उच्चारयत

खाद्	खादित्वा
पठ्	पठित्वा
लिख्	लिखित्वा
दृश्	दृष्ट्वा
ग्रह्	गृहीत्वा
श्रु	श्रुत्वा
गम्	गत्वा
नी	नीत्वा
दा	दत्वा
हस्	हसित्वा
चल्	चलित्वा

2. प्रश्नान् उत्तरत

यथा – प्र. एकदा श्रीकृष्णः कुत्र अगच्छत् ?
उ. एकदा श्रीकृष्णः यमुनातटम् अगच्छत् ।

क. यमुनाजले कस्य कुण्डम् आसीत् ?
ख. विषयुक्तेन वायुना के शुष्काः जाताः?
ग. कालियनागस्य कति फणाः आसन् ?

घ. कालियनागस्य मुखात् किं प्रावहत् ?
ङ. कस्य कारणात् जलं विषयुक्तम् अभवत् ?

3. अधोलिखितवाक्येषु रिक्तस्थानानि पूरयत

क. गोपाः पिपासया आकुलाः ———————— यमुनाजलम् अपिबन् ।
ख. श्रीकृष्णः तान् मूर्च्छितान् ———————— व्याकुलः अभवत् ।
ग. पशवः तं जलं ———————— मृत्युं प्राप्ताः ।
घ. कालियः हस्तौ ————————अवदत् भवान् एव सर्वप्राणिनां प्रभुः ।
ङ. श्रीकृष्णः कालियस्य फणान् ———————— अनृत्यत् ।

4. मञ्जूषातः शब्दान् चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत

अनृत्यत्, अपिबन्, आरोहत्, न्यपतत्, अभवन्

क. श्रीकृष्णः फणान् आरुह्य ————————।
ख. श्रीकृष्णः एकं वृक्षम् ————————।
ग. तस्मात् वृक्षात् सः विषयुक्ते जले ———————— ।
घ. गोपाः विषयुक्तं जलम् ————————।
ङ. कालियनागस्य फणाः शनैः शनैः छिन्नाः भिन्नाः ————————।

5. अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमेण पुनः लिखत

क. कालियनागः अवदत् – भगवन् न मे अपराधः ।
ख. अनेके खगाः पशवः अपि तं जलं पीत्वा मृत्युं प्राप्ताः ।
ग. एकदा श्रीकृष्णः गोपैः सह यमुनातटम् अगच्छत् ।
घ. गोपाः विषयुक्तं जलं पीत्वा मूर्च्छिताः जाताः ।
ङ. यमुनाजलं विषाक्तम् आसीत् ।
च. श्रीकृष्णः वृक्षात् जले न्यपतत् । कालियस्य फणेषु अनृत्यत् ।
छ. श्रीकृष्णः अवदत् – रे दुष्ट! तव कारणात् जलं विषाक्तं जातम् । इतः कुत्रापि अन्यत्र गच्छ ।
ज. सर्पः ततः पलायितः ।

सप्तदशः पाठः

रक्षकः भक्षकात् श्रेष्ठः

[illegible] प्रत्ययः

एकदा बालः सिद्धार्थः प्रातः भ्रमणाय उपवनम् अगच्छत् । उपवने बहवः खगाः मधुरं कूजन्ति स्म । सिद्धार्थः पक्षिणः अपश्यत् । तेषां कलरवं श्रुत्वा अतुष्यत् । किंचित् कालानन्तरं तस्य भ्राता देवदत्तः अपि आखेटं कर्तुम् उपवनम् आगच्छत् । सः शरेण आकाशे एकं हंसम् अविध्यत् । शरेण विद्धः

हंसः भूमौ अपतत् । सिद्धार्थः करुणया तं हंसं कुटीरम् आनयत् । तत्र हंसस्य परिचर्याम् अकरोत् । देवदत्तः स्वशरेण विद्धं हंसं ग्रहीतुं तत्र आगच्छत्। सिद्धार्थः देवदत्तम् अवदत् – त्वं हंसं मारयितुम् इच्छसि, किन्तु अहम् एनं रक्षितुम् इच्छामि। त्वं घातकः, अहं रक्षकः । अतः अयं हंसः मम एव ।

अथ सिद्धार्थस्य देवदत्तस्य च मध्ये विवादः अभवत् । देवदत्तः सर्वं निवेदयितुं नृपस्य समीपम् अगच्छत् । सिद्धार्थः अपि तेन सह तत्र अगच्छत् । देवदत्तः नृपाय सर्वं वृत्तान्तम् अकथयत् तथा सिद्धार्थः अपि स्वं पक्षम् अवदत् । नृपः तत् सर्वम् अशृंणोत् निर्णयं च अकरोत् - अयं हंसः तु सिद्धार्थस्य एव, यतः सः अस्य रक्षकः । उक्तं हि—रक्षकः भक्षकात् श्रेष्ठः इति ।

शब्दार्थाः

भ्रमणाय	–	घूमने के लिए
उपवनम्	–	बगीचा
कलरवम्	–	मीठी आवाज
शरेण	–	तीर से
विद्धः	–	घायल किया हुआ
अविध्यत्	–	वेध दिया
ग्रहीतुम्	–	लेने के लिए (ग्रहण करने के लिए)
घातकः	–	मारने वाला
रक्षकः	–	रक्षा करने वाला (पालक)
भक्षकः	–	खाने वाला
आखेटम्	–	शिकार
परिचर्याम्	–	सेवा
निवेदयितुम्	–	निवेदन करने के लिए

अभ्यासः

1. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

क. सिद्धार्थः भ्रमणाय कुत्र अगच्छत्?
ख. उपवने खगाः किं कुर्वन्ति स्म?
ग. हंसं दृष्ट्वा देवदत्तः किम् अकरोत्?
घ. सिद्धार्थः देवदत्तं किम् अवदत्?
ङ. शरेण विद्धः हंसः कुत्र अपतत्?
च. हंसस्य रक्षकः कः आसीत्?

2. प्रश्ननिर्माणं कुरुत

क. **सिद्धार्थः** पक्षिणः अपश्यत् ।
____________________?

ख. देवदत्तः **शरेण** हंसम् अविध्यत् ।
____________________?

ग. सिद्धार्थः **करुणया** तं हंसं कुटीरम् आनयत् ।
____________________?

घ. नृपः तत् सर्वम् श्रुत्वा **निर्णयम्** अकरोत् ।
____________________?

ङ. हंसस्य रक्षकः **सिद्धार्थः**।
____________________?

3. पर्यायवाचिनः शब्दान् मेलयत

क	ख
उपवनम्	परिचर्याम्
खगाः	दयया
बाणेन	पक्षिणः
करुणया	शरेण
सेवाम्	उद्यानम्

4. अधोलिखितवाक्यानि पूरयत

क. उपवने बहवः खगाः ———————— ।

ख. कालानन्तरं देवदत्तः अपि उपवनम् ———————— ।

ग. शरेण विद्धः हंसः भूमौ ———————— ।

घ. नृपः तत् सर्वम् ———————— निर्णयं च ————————।

अष्टादशः पाठः

दशमः त्वम् असि

संख्यावाचकः

एकदा दशबालकाः स्नानाय नदीम् अगच्छन् । ते निर्मले शीतले च नदीजले चिरं स्नानम् अकुर्वन् । ततः ते तीर्त्वा पारं गताः । तदा तेषां नायकः अपृच्छत् – अपि सर्वे बालकाः नद्याः उत्तीर्णाः? इति ।

तदा कश्चित् बालकः अगणयत् – एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः, पञ्च, षट्, सप्त, अष्टौ, नव इति । सः स्वं न अगणयत् । अतः सः अवदत् – नव एव सन्ति । दशमः न अस्ति इति । अपरः अपि बालकः पुनः अन्यान् बालकान् अगणयत् । तदा अपि नव एव आसन् । अतः ते निश्चयम् अकुर्वन् यत् दशमः नद्यां मग्नः इति । ते दुःखिताः तूष्णीम् अतिष्ठन् ।

तदा कश्चित् पथिकः तत्र आगच्छत् । सः तान् बालकान् दुःखितान् दृष्ट्वा अपृच्छत् – बालकाः, युष्माकं दुःखस्य कारणं किम्? इति । बालकानां नायकः अकथयत् – वयं दश बालकाः स्नातुम् आगताः । इदानीं नव एव स्मः। एकः नद्यां मग्नः इति ।

पथिकः तान् अगणयत् । तत्र दश बालकाः एव आसन् । सः नायकम् आदिशत्-त्वं बालकान् गणय इति । सः तु नव बालकान् एव अगणयत् । तदा पथिकः अवदत्– दशमः त्वम् असि इति ।

तत् श्रुत्वा प्रहृष्टाः भूत्वा सर्वे गृहम् अगच्छन् ।

शब्दार्थाः

इदानीम्	–	अब
एकदा	–	एक बार
स्नानाय	–	नहाने के लिए
निर्मलम्	–	साफ
शीतलम्	–	ठण्डा
तीर्त्वा	–	तैरकर
नायकः	–	नेता
चिरम्	–	देर तक
उत्तीर्णाः	–	पार कर लिया
तदा	–	तब
अगणयत्	–	गिना
स्नात्वा	–	नहाकर
अपरः	–	दूसरा
पुनः	–	फिर, दोबारा
आसन्	–	थे/थीं
नद्याम्	–	नदी में
तूष्णीम्	–	मौन
पथिकः	–	राहगीर
स्नातुम्	–	स्नान के लिए
मग्नः	–	डूब गया
प्रहृष्टाः	–	आनन्दित
श्रुत्वा	–	सुनकर
इति	–	उद्धरण की समाप्ति का सूचक अव्यय

अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत

पुंल्लिङ्गे	स्त्रीलिङ्गे	नपुंसकलिङ्गे
एकः	एका	एकम्
द्वौ	द्वे	द्वे
त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
पञ्च	पञ्च	पञ्च
षट्	षट्	षट्
सप्त	सप्त	सप्त
अष्ट	अष्ट	अष्ट
नव	नव	नव
दश	दश	दश

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

क. कति बालकाः स्नानाय अगच्छन् ?

ख. ते स्नानाय कुत्र अगच्छन् ?

ग. ते कं निश्चयम् अकुर्वन् ?

घ. मार्गे कः आगच्छत् ?

ङ. पथिकः किम् अवदत् ?

3. अधोलिखितानां शुद्धकथनानां समक्षम् (✓) इति अशुद्धकथनानां समक्षम् (×) इति चिह्नं कुरुत

क. दश बालकाः स्नानाय अगच्छन् । ☐

ख. सर्वे वाटिकायाम् अभ्रमन् । ☐

ग. ते वस्तुतः नव बालकाः एव आसन् । ☐

घ. बालकः स्वं न अगणयत् ।

ङ. एकः बालकः नद्यां मग्नः ।

च. ते सुखिताः तूष्णीम् अतिष्ठन् ।

छ. कोऽपि पथिकः न आगच्छत् ।

ज. नायकः अवदत् – दशमः त्वम् असि इति ।

झ. ते सर्वे प्रहृष्टाः भूत्वा च गृहम् अगच्छन् ।

4. मञ्जूषातः शब्दान् चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत

तीर्त्वा	श्रुत्वा	दृष्ट्वा	कृत्वा	गृहीत्वा	गणयित्वा

क. ते बालकाः ——— नद्याः उत्तीर्णाः ।
ख. पथिकः बालकान् दुःखितान् ——— अपृच्छत् ।
ग. पुस्तकानि ——— विद्यालयं गच्छ ।
घ. पथिकस्य वचनं ——— सर्वे प्रमुदिताः गृहम् अगच्छन् ।
ङ. पथिकः बालकान् ——— अकथयत् दशमः त्वम् असि ।
च. मोहनः कार्यं ——— गृहं गच्छति ।

5. वस्तूनि गणयित्वा संख्याम् लिखत
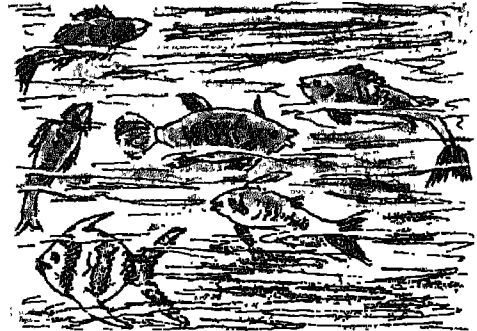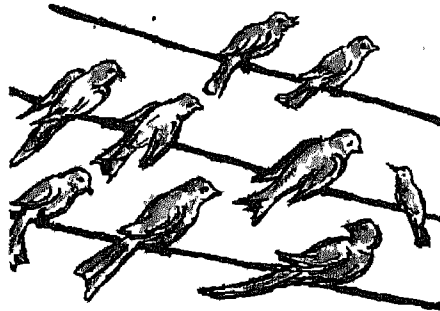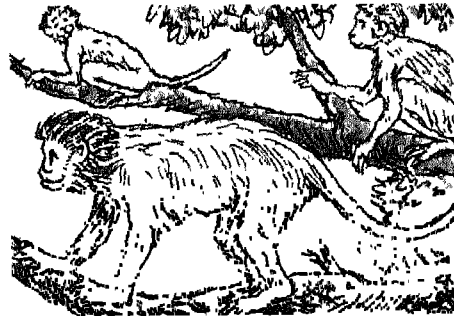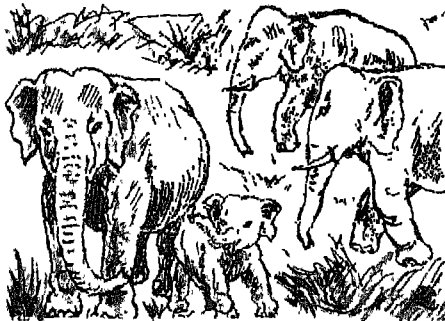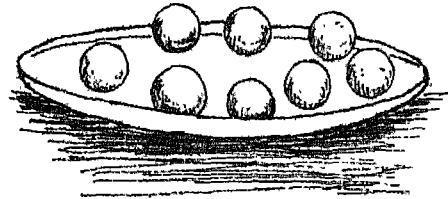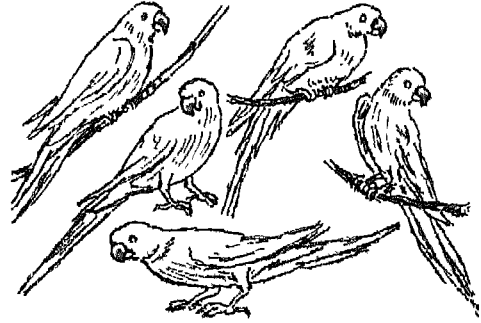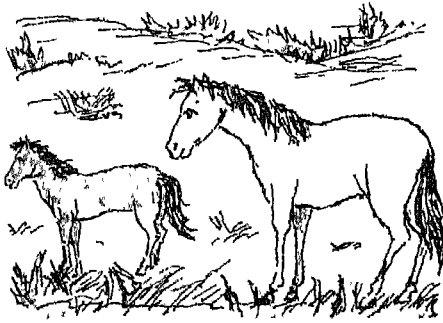
एकोनविंशः पाठः

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य

अव्ययप्रयोगः

मन्दरपर्वते दुर्दान्तः नाम सिंहः वसति स्म । सः च सर्वदा बहूनां पशूनां वधं करोति स्म । एकदा सर्वे पशवः सिंहस्य समीपम् अगच्छन् अवदन् च – मृगेन्द्र! त्वं किमर्थं सर्वदा पशूनां वधं करोषि? प्रसीद । वयं स्वयं तव भोजनाय प्रतिदिनम् एकम् पशुं प्रेषयिष्यामः ।

ततः सिंहः अवदत् – यदि यूयम् एवम् इच्छथ, तर्हि भवतु तत् । ततः प्रभृति एकः पशुः प्रतिदिनं क्रमेण सिंहस्य समीपं गच्छति स्म ।

एकदा एकस्य शशकस्य वारः समायातः । सः अचिन्तयत्- यदि मम मरणं निश्चितम् एव, तर्हि मन्दम् एव गच्छामि । सः अतिविलम्बेन सिंहस्य समीपम् अगच्छत्।

तत्र सिंहः तु क्षुधया पीडितः आसीत् । अतिक्रुद्धः सः शशकम् अपृच्छत् – त्वं कथं विलम्बात् समायातः? शशकः सविनयम् अवदत् महाराज ! न मम दोषः । मार्गे अपरः सिंहः आसीत्, सः माम् अपश्यत् अवदत्, च "अहम् अस्य वनस्य राजा । अहं त्वां भक्षयिष्यामि ।" अहं तम् अवदम् – अस्य वनस्य राजा तु दुर्दान्तः नाम सिंहः अस्ति । सः अद्य मां भक्षयिष्यति । अहम् अधुना तस्य भोजनाय गच्छामि । अहम् अत्र पुनः आगमिष्यामि इति शपथं कृत्वा अत्र आगच्छम् । एतत् श्रुत्वा सः सिंहः अतिक्रुद्धः अभवत् ।

दुर्दान्तः क्रोधेन अवदत् - रे शठ ! कुत्र अस्ति सः अपरः सिंहः? तं सत्वरं मां दर्शय। शशकः सिंहम् एकस्य गभीरस्य कूपस्य समीपम् अनयत् अकथयत् च – पश्यतु महाराज ! अस्मिन् कूपे एव सः सिंहः वसति ।

तस्य कूपस्य जले दुर्दान्तः स्वप्रतिबिम्बम् अपश्यत् अवदत् च एषः एव सः सिंहः? क्रोधेन परिपूर्णः सः दुर्दान्तः आत्मानं कूपे अक्षिपत् पञ्चत्वं च अगच्छत्।
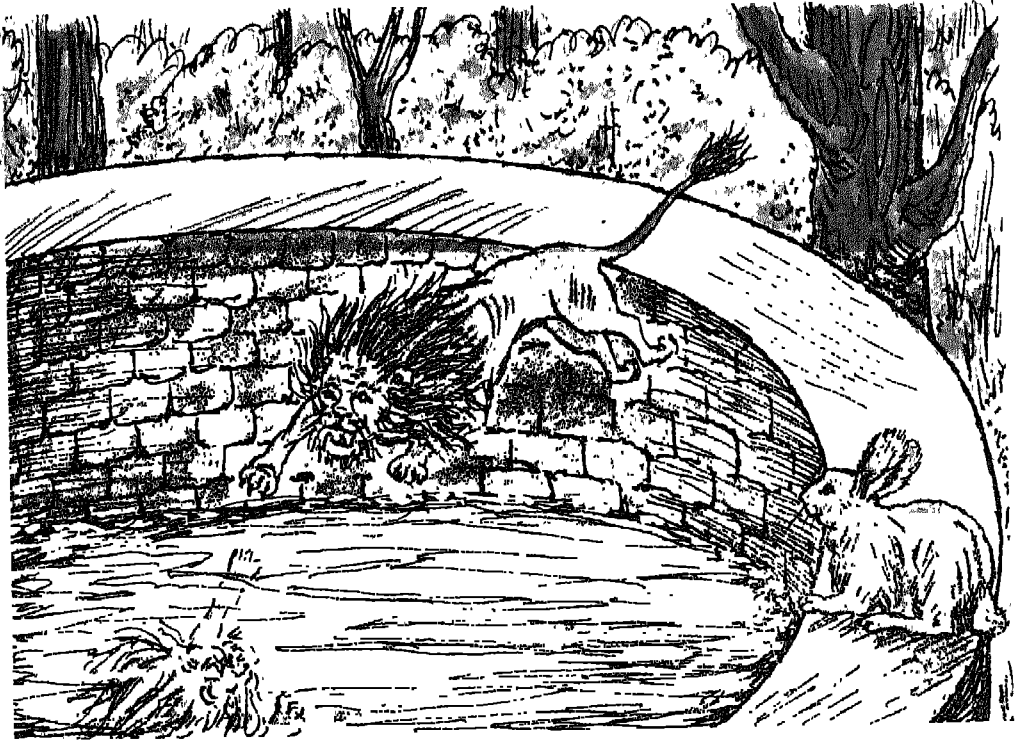
उक्तं हि यथा –

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम् ।
पश्य सिंहो मदोन्मत्तः शशकेन निपातितः ।।

शब्दार्थाः

तव	–	तुम्हारा/ तुम्हारी
युष्माकम्	–	तुम लोगों का/के/की
प्रेषयिष्यामः	–	भेजेंगे
कुतः	–	कहाँ से
अपरः	–	दूसरा
सत्वरम्	–	जल्दी
निर्बुद्धेः	–	बुद्धिरहित
निपातितः	–	गिराया गया
पञ्चत्वम् अगच्छत्	–	मृत्यु को प्राप्त हुआ
क्षुधया	–	भूख से
प्रसीदतु भवान्	–	आप कृपा करें, प्रसन्न हों
अग्रे	–	सामने
मन्दम् मन्दम्	–	धीरे धीरे
शठ	–	दुष्ट

अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत

वसति स्म	–	वसन्ति स्म
गच्छति स्म	–	गच्छन्ति स्म
खादति स्म	–	खादन्ति स्म
वदति स्म	–	वदन्ति स्म
पठति स्म	–	पठन्ति स्म
नयति स्म	–	नयन्ति स्म

2. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

क. सिंहस्य नाम किम् आसीत्?
ख. सः केषां वधं करोति स्म?
ग. सर्वे पशवः कस्य समीपे अगच्छन्?
घ. सिंहः कूपस्य जले किम् अपश्यत्?
ड. अपरं सिंहं दृष्ट्वा दुर्दान्तः किम् अकरोत्?

3. शुद्धकथनानां समक्षम् (√) इति, अशुद्धकथनानां समक्षम् (X) इति चिह्नं कुरुत

क. दुर्दान्तः पशूनां वधं न करोति स्म । ☐
ख. एकः पशुः प्रतिदिनं क्रमेण सिंहस्य समीपं गच्छति स्म । ☐
ग. सिंहः तु क्षुधया पीडितः आसीत् । ☐
घ. शशकः मार्गे वस्तुतः अपरं सिंहं न अपश्यत् । ☐
ड. शशकः दुर्दान्तम् एकस्य गभीरस्य कूपस्य समीपम् अनयत् । ☐
च. सिंहः आत्मानं कूपे न अक्षिपत् । ☐

4. पाठात् शब्दान् चित्वा वार्तालापं पूरयत

दुर्दान्तः – भोः पशवः ! किमर्थम् आगताः?
पशवः – हे महाराज ! सर्वान् ________ मा जहि ।
एकः पशुः प्रतिदिनं तव समीपम् ________ ।
दुर्दान्तः – त्वं किमर्थं ________ समायातः ?
शशकः – प्रसीदतु भवान् । मार्गे ________ सिंहः माम् अपश्यत्
________ च, अहम् अस्य ________ राजा।
अहम् त्वां ________ ।
दुर्दान्तः – एषः एव ________ सिंहः?
क्रुद्धः सः आत्मानं ________ अक्षिपत् ________ च अगच्छत्।

5. विलोमशब्दान् मेलयत

क	ख
एकः	जीवनम्
निश्चितम्	अविलम्बेन
मरणम्	दूरम्
विलम्बेन	अनेके
समीपम्	अनिश्चितम्

विंशः पाठः

सुभाषितानि

पुस्तकेषु च या विद्या, परहस्तेषु यद्धनम् ।
कार्यकाले समुत्पन्ने, न सा विद्या न तद्धनम् ।। 1।।
उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे ।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः ।। 2।।
काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ।। 3।।
प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ।। 4।।
हस्तौ न पादौ, नयने विशाले,
कर्णौ सुतीक्ष्णौ वदनं सुकान्तम् ।
नासा च रम्या, मननाय चित्तम्,
ईशेन दत्तं दयया समग्रम् ।। 5।।

शब्दार्थाः

परहस्तेषु	–	दूसरे के हाथों में
पुस्तकेषु	–	किताबों में
या	–	जो
कार्यकाले समुत्पन्ने	–	समय आने पर

यद्धनम्	–	जो धन
उत्सवे	–	त्यौहार में
व्यसने	–	सङ्कट में
दुर्भिक्षे	–	सूखा होने पर
राष्ट्रविप्लवे	–	देश पर विपत्ति आने पर
राजद्वारे	–	राजदरबार में
काव्यशास्त्रविनोदेन	–	काव्यशास्त्र के आनन्द से
कालः	–	समय
धीमताम्	–	बुद्धिमानों का/की/के
मूर्खाणाम्	–	मूर्खों का/ की/ के
निद्रया	–	नींद से
कलहेन	–	झगड़े से
प्रियवाक्यप्रदानेन	–	मीठे वचन बोलने से
तुष्यन्ति	–	सन्तुष्ट होते हैं/होती हैं
वक्तव्यम्	–	बोलना चाहिए
नयने	–	दो आँखें
नासा	–	नाक
ईशेन	–	भगवान् के द्वारा
समग्रम्	–	पूरा

अभ्यासः

1. पाठे दत्तानां श्लोकानां वाचनं कुरुत ।

2. श्लोकांशानाम् उचितमेलनं कुरुत

क	ख
राजद्वारे श्मशाने च	सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः
कार्यकाले समुत्पन्ने	ईशेन दत्तं दयया समग्रम्
तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं	यस्तिष्ठति स बान्धवः

प्रियवाक्यप्रदानेन	न सा विद्या न तद्धनम्
नासा च रम्या, मननाय चित्तं	वचने का दरिद्रता

3. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत

क. पुस्तकेषु च या विद्या ——————————।

ख. —————————— दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे ।

ग. काव्यशास्त्रविनोदेन ——————————।

घ. —————————— सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।

ङ. हस्तौ च पादौ, नयने विशाले ——————————।

4. अधोलिखितेषु वाक्येषु शुद्धकथनानां समक्षम् 'आम्' अशुद्धकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत

क. पुस्तकेषु विद्या ज्ञानाय भवति । ☐

ख. परहस्तेषु यद् धनम् तत् सुरक्षितम् । ☐

ग. सर्वदा प्रियवाक्यम् वक्तव्यम् । ☐

घ. दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे च यः न तिष्ठति स बान्धवः। ☐

ङ. काव्यशास्त्रविनोदेन मूर्खाणां कालः गच्छति । ☐

5. प्रश्ननानाम् उत्तराणि लिखत

क. सर्वे जन्तवः केन तुष्यन्ति? ——————————

ख. इदं शरीरं केन दत्तम्? ——————————

ग. राजद्वारे श्मशाने च कः तिष्ठति ? ——————————

घ. धीमतां कालः केन गच्छति? ——————————

ङ. कुत्र स्थिता विद्या कार्यकाले विद्या न भवति? ——————————

परिशिष्टम्

शब्दकोशः

अ

अकुरुत (तुम लोगों ने) किया (कृ धातु, लङ् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन)

अगच्छः तुम गये/ गईं (गम् धातु, लङ् लकार, म. पु., एकवचन)

अगच्छत् वह गया/ गई (गम्, लङ् लकार, प्र.पु., एकवचन)

अगच्छम् (अहम्) मैं गया/ गई (गम्, धातु,लङ् लकार ,उ. पु., एकवचन)

अग्रजः बड़ा भाई (अग्रज, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा, एकवचन)

अग्रे सामने (अग्र, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी एकवचन)

अगणयत् (उसने) गिना (गण्, लङ् लकार, प्र. पु., एकवचन)

अचिन्तयत् (उसने) सोचा (चिन्त्, लङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन)

अजाः बकरे (अज, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन) बकरियाँ (अजा, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन) बकरियों को (अजा, स्त्रीलिङ्ग द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

अत्र यहाँ (अव्यय)

अतिथिः मेहमान (अतिथि, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

अतिवेगेन बहुत वेग से (अतिवेग, पुंल्लिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

अतीव बहुत (अव्यय)

अद्य आज (अव्यय)

अधः नीचे (अव्यय)

अनुग्रहम् कृपा को (अनुग्रह, पुंल्लिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

अनुजः छोटा भाई (अनुज, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

अनृत्यत् नाचने लगा/लगी (नृत्,लङ्, प्र. पु., एकवचन)

अनेकान् अनेकों को (पुंल्लिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

अन्ये दूसरे (अन्य, सर्वनाम, पुंल्लिङ्ग,, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)।

अन्येषु दूसरों में (अन्य, सर्वनाम, पुंल्लिङ्ग / नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, बहुवचन)

अपरः दूसरा (अपर पुंल्लिङ्ग, प्रथमा, एकवचन)

अपश्यत (तुम लोगों ने) देखा (दृश्, लङ्, म. पु., बहुवचन)

अपश्याम (हम लोगों ने) देखा (दृश्, लङ्, उ. पु., बहुवचन)

अपातयत् गिराया/ गिराई (पत्, णिच् लङ्, प्र. पु., एकवचन)

अपि भी (अव्यय)

अर्पयन्ति अर्पण करते हैं/ करती हैं (अर्प्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

अलम् पर्याप्त, योग्य, बस, बहुत हो चुका (अव्यय)

अलङ्करोति सुशोभित करता है/ करती है (अलम् + कृ, लट् , प्र पु., एकवचन)

अवधानेन ध्यान से (अवधान, नपुंसकलिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

अशृणोत् उसने सुना (श्रु, लङ् लकार, प्र. पु., एकवचन)

अश्वः (एक) घोड़ा, (अश्व, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

अश्वा (एक) घोड़ी (अश्वा, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

अश्वाः घोड़े (अश्व, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन) घोड़ियाँ (अश्वा, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन) घोड़ियों को (अश्वा, स्त्रीलिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

अश्वेषु घोड़ो में (अश्व, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, बहुवचन)

अष्टादश अठारह (संख्यावाची)

अस्ति है (अस्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

अस्माकम् हमारा/ हमारी/ हमारे (अस्मद्, सर्वनाम, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

अस्मिन् इसमें (इदम् पुंल्लिङ्ग, सप्तमी, एकवचन)

अहम् मैं (अस्मद्, सर्वनाम, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

अहो अरे (विस्मयादि बोधक)

आ

आकाशे आकाश में (आकाश, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

आखेटम् शिकार को (आखेट, द्वितीया, एकवचन)

आगच्छ आओ (आ गम् लोट्, म.पु.,एकवचन)

आगच्छति आता है/ आती है (आ + गम्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

आगमिष्यन्ति आयेंगे/ आयेंगी (आ + गम्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

आचार्य ! हे गुरु जी ! (आचार्य, पुंल्लिङ्ग, सम्बोधन, एकवचन)

आचार्ये ! हे गुरु (मैडम) आचार्या, स्त्रीलिङ्ग, सम्बोधन, एकवचन

आदिशति आज्ञा देता है/ देती है, (आ + दिश्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

आनय लाओ (आ + नी, लोट् लकार, मध्यम पु., एकवचन)

आनयति लाता है/ लाती है, (आ + नी, लट्, प्र. पु., एकवचन)

आनयन्ति लाते हैं / लाती हैं,(आ+नी, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

आनयामि लाता हूँ/ लाती हूँ, (आ + नी, लट्, उ. पु., एकवचन)

आपणम् बाजार (आपण, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

आपणात् बाजार से (आपण, नपुंसकलिङ्ग, पञ्चमी विभक्ति, एकवचन)

आपतन्ति चारों ओर से गिरते हैं/ गिरती हैं (आ + पत्, लट् , प्र. पु., बहुवचन)

आम् हाँ (अव्यय)

आम्रम् एक आम (आम्र, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

आम्राणि बहुत से आम (आम्र, नपुंसकलिङ्ग , प्रथमा/द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

आरोहत् चढ़ गया / गई (आ + रुह्, लङ्, प्र. पु., एकवचन)

आरोहन्ति चढते हैं/ चढ़ती हैं (आ + रुह्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

आर्द्रः गीला (आर्द्र, पुंल्लिङ्ग,, प्र. वि., एकवचन)

आसन् थे/ थीं, (अस्, लङ्, प्र. पु., बहुवचन)

आसने आसन पर (आसन, नपुं. सप्तमी, एकवचन)

आसीत् था/ थी (अस्, लङ्, प्र. पु.,एकवचन)

इ

इतः यहाँ से (अव्यय)

इति समाप्तिद्योतक (अव्यय)

इदानीम् अब (अव्यय)

इयम् यह (इदम्, सर्वनाम, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

ई

ईशेन भगवान् से/ द्वारा (ईश, पुंल्लिङ्ग , तृतीया विभक्ति, एकवचन)

ईश्वराय भगवान् के लिए (ईश्वर, पुंल्लिङ्ग, चतुर्थी विभक्ति, एकवचन)

उ

उक्तम् कहा गया (ब्रू, वच्, क्त, नपुं. , प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

उत्सवः त्यौहार (उत्सव, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

उत्तीर्णाः पार कर गये (उत् तृ, क्त, नपुं, प्रथमा, बहुवचन)

उत्सवे त्यौहार (उत्सव, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

उद्यमशीलः परिश्रमी (उद्यमशील, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

उद्यमेन परिश्रम से (उद्यम, पुंल्लिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

उद्यानम् बाग (उद्यान, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

उद्यानस्य बाग का/के/ की (उद्यान, नपुंसकलिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

उद्याने बाग में (उद्यान, नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

उपरि ऊपर (अव्यय)

उपवनम् (एक) बाग, बाग को (उपवन, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

उपविशतु (आप) बैठिए (उप + विश्, लोट्, प्र. पु., एकवचन)

उष्णम् गर्म (विशेषण) (उष्ण, प्रथमा, द्वितीया एकवचन)

ए

एकदा एक बार (अव्यय)

एकाधिकशतम् एक सौ एक (संख्यावाचक)

एकैव एक ही (एका + एव)

एतत् यह (एतत्, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

एतस्य इसका (एतत्, सर्वनाम, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

एताः ये (एतत्, सर्वनाम, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

एतानि ये सब (एतत्, सर्वनाम, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

एते ये सब (एतत्, सर्वनाम, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

एव ही (अव्यय)

एषः यह (एतत्, सर्वनाम, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

एषा यह (एतत्, सर्वनाम, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

ऐ

ऐच्छत् इच्छा किया/ की (इष्, लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन)

क

कः कौन (किम्, सर्वनाम् पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

कङ्कणेन कंगन से (कङ्कण, नपुंसकलिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

कण्ठस्य गले का/ की/ के (कण्ठ, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

कुर्वन् करता हुआ (कृ शतृ, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

कुर्वन्ति करते हैं/ करती हैं (कृ लट्, प्र. पु., बहुवचन)

कुसुमानाम् फूलों का / की / के (कुसुम, नपुंसकलिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

कुसुमानि (बहुत से) फूल (कुसुम, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

कूजन्ति कूकते हैं/ कूकती हैं (कूज्, लट्, प्र. पु. , बहुवचन)

कूपः कुआँ (कूप, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

कृते लिए (अव्यय)

कृषिकार्यम् खेती को (कृषिकार्य), (नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया, एकवचन)

कृष्णः कृष्ण (भगवान), काला रंग (कृष्ण, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

के बहुत से (कौन) (किम्, सर्वनाम, पुंल्लिङ्ग , प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

केचन कोई-कोई (किम् सर्वनाम, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन, चन प्रत्यय)

कदलीफलानि केले (कदलीफल नपुंसकलिङ्ग , प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

कथयति कहता है/ कहती है (कथ्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

कथयन्ति कहते हैं/ कहती हैं (कथ्, लट् लकार, प्र. प.,बहुवचन)

कथाम् कहानी को, (कथा, स्त्रीलिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

कदा कब (अव्यय)

कदाचन कभी भी (अव्यय)

कन्दुकेन गेंद से (कन्दुक, नपुंसकलिङ्ग , तृतीया विभक्ति, एकवचन)

कमलम् कमल (कमल, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

कमलानि बहुत से कमल (कमल नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति,बहुवचन)

कमलेषु कमलों में/पर (कमल, नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, बहुवचन)

कम्पितः काँप गया (कम्प्, क्त प्रत्यय, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा, एकवचन)

करणीयम् करना चाहिए/ करने योग्य (कृ, अनीयर् नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा,एकवचन)

करिष्यसि करोगे/ करोगी (कृ, लृट्, म. पु., एकवचन)

करोति करता है /करती है (कृ,लट्,प्र.पु., एकवचन)

करोषि करते हो/करती हो (कृ, लट्, म. पु., एकवचन)

कर्षति जोतता है/जोतती है (कृष्, लट्, प्र.पु., एकवचन)

कलरवम् चिडियों की मीठी आवाज (कलरव, पुंल्लिङ्ग, द्वितीया विभक्ति,एकवचन)

कलहेन झगड़े से (कलह, पुंल्लिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

कलिकाः कलियाँ (कलिका, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया, बहुवचन)

कश्चित् कोई (कः + चित्)

कस्य किसका / किसकी (किम्, सर्वनाम, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति,एकवचन)

कानि (बहुत से) कौन (किम्, सर्वनाम, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

कालः समय (काल, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

काव्यशास्त्र-विनोदेन काव्य शास्त्रों के मनोरंजन से (काव्यशास्त्र विनोद, पुंल्लिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

किम् क्या (किम्, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

किमर्थम् किसलिए (किम् + अर्थम्)

कुण्डलिकाः जलेबियाँ (कुण्डलिका, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

कुतः कहाँ से (अव्यय)

कुत्र कहाँ (अव्यय)

कुरुथ करते हो/करती हो (कृ, लट्, म. पु., बहुवचन)

केन किस से (किम्, सर्वनाम, पुंल्लिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

केभ्यः किन के लिए, किन से (अलग होने के अर्थ में) (किम्, सर्वनाम पुंल्लिङ्ग,/ नपुंसकलिङ्ग, चतुर्थी / पञ्चमी विभक्ति, बहुवचन)

केवलम् मात्र (अव्यय)

कोकिला (एक) कोयल (कोकिला, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

कोकिलायाः कोयल का/ के / की /से (कोकिला, स्त्रीलिङ्ग, पञ्चमी / षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

क्रियापदानि क्रिया पद को (क्रिया पद, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

क्रीडति खेलता है / खेलती है (क्रीड्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

क्रीडथ खेलते हो / खेलती हो (क्रीड्, लट्, म. पु., बहुवचन)

क्रीडनकानि खिलौने (क्रीडनक, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

क्रीडन्ति खेलते हैं / खेलती हैं (क्रीड्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

क्रीडामि खेलता हूँ / खेलती हूँ (क्रीड्, लट्, उ.पु., एकवचन)

क्रीडामः (हम) खेलते हैं / खेलती है (क्रीड्, लट्, उ. पु., बहुवचन)

क्षिपन्ति फेंकते हैं / फेंकती हैं (क्षिप्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

क्षुद्राः तुच्छ (क्षुद्र, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

क्षुधया भूख से (क्षुधा, स्त्रीलिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

क्षेत्रे मैदान में (क्षेत्र, नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

ख

खगाः (बहुत से) पक्षी (खग, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

खगान् पक्षियों को (खग, पुंल्लिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

खादति खाता है/खाती है (खाद्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

खादन्ति खाते हैं /खाती है (खाद्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

खादामि खाता हूँ /खाती हूँ (खाद्, लट्,उ पु., एकवचन)

खेलति खेलता है/ खेलती है (खेल्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

खेलन्ति खेलते हैं / खेलती हैं (खेल्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

खेलथ खेलते हो / खेलती हो (खेल्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

खेलाः (बहुत से) खेल (खेल, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

ग

गङ्गायाः गंगा का / के / की / से (गङ्गा, स्त्रीलिङ्ग, पञ्चमी/ षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

गङ्गायाम् गंगा में / पर (गङ्गा, स्त्रीलिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

गच्छति जाता है /जाती है (गम्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

गच्छसि जाते हो /जाती हो (गम्,लट्,म. पु., एकवचन)

गच्छामि जाता हूँ /जाती हूँ (गम्, लट्, उ. पु., एकवचन)

गजः (एक) हाथी (गज, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

गजाः (बहुत से) हाथी (गज, पुंल्लिग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

गतिः चाल (गति, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

गमिष्यसि जाओगे/जाओगी (गम. लृट्, म. पु., एकवचन)

गमिष्यामः (हम) जाएँगे / जाएँगी (गम्, लृट्, उ. पु., बहुवचन)

गमिष्यामि जाऊँगा /जाऊँगी (गम्, लृट्, उ. पु., एकवचन)

गायति गाता है / गाती है (गै, लट्, प्र. पु., एकवचन)

गायथ गाते हो / गाती हो (गै, लट्, म. पु., बहुवचन)

गायन्ति गाते हैं / गाती हैं (गै, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

गायसि गाते हो / गाती हो (गै, लट्, म. पु., एकवचन)

गायामि गाता हूँ / गाती हूँ (गै, लट्, उ. पु., एकवचन)

गायामः गाते हैं / गाती हैं (गै, लट्, उ. पु., बहुवचन)

गुञ्जति गूँजता है / गूँजती है (गुञ्ज्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

गुञ्जन्ति गूँजते हैं / गूँजती हैं (गुञ्ज्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

गुणिनः गुणीजन (गुणिन् पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

गृहम् (एक) घर, घर को (गृह, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

गृहात् घर से (गृह, नपुंसकलिङ्ग, पञ्चमी, एकवचन)

गृहाणि (बहुत से) घर (गृह, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा, बहुवचन)

गोपाः ग्वाले (गोप, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा, बहुवचन)

गोविन्दस्य गोविन्द का (गोविन्द, षष्ठी, एकवचन)

ग्रहीतुम् लेने के लिए, ग्रहण करने के लिए (ग्रह् तुमुन्, अव्यय)

ग्रामात् गाँव से (ग्राम, पञ्चमी, एकवचन)

ग्रीवा गरदन (ग्रीवा, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

ग्रीष्मावकाशे गर्मी की छुट्टियों में (ग्रीष्मावकाश, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी, एकवचन)

घ

घातकः मारने वाला (घातक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

च

च और (अव्यय)

चक्रम् पहिया, पहिये को (चक्र, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया, एकवचन)

चक्राणि बहुत से पहिये (चक्र, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया, बहुवचन)

चक्रेण एक पहिये से (चक्र, नपुंसकलिङ्ग, तृतीया, एकवचन)

चटका गोरैया (चटका, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा, एकवचन)

चटकाः बहुत सी गोरैया (चटका, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया बहुवचन)

चरति चरता है / चरती है (चर्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

चरन्ति चरते हैं / चरती हैं (चर्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

चलन्ति चलते हैं। (चल्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

चित्वा चुनकर (चि क्त्वा, अव्यय)

चित्रम् एक चित्र, चित्र को (चित्र, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया एकवचन)

चित्राणि बहुत से चित्र, बहुत से चित्रों को (चित्र, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया, बहुवचन)

चिरम् देर तक (अव्यय)

छ

छात्रः विद्यार्थी (छात्र, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

छात्रस्य विद्यार्थी का (छात्र, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी, एकवचन)

छात्रा विद्यार्थिनी (छात्रा, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

छात्राः ! हे विद्यार्थियो ! हे विद्यार्थिनियो ! (छात्र, छात्रा, सम्बोधन, बहुवचन)

छात्राणाम् विद्यार्थियों का / के / की (छात्र, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन) विद्यार्थिनियों का / के / की (छात्र, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

ज

जन्मतः जन्म से (जन्मन् + तसिल्, अव्यय)

जनाः (बहुत से) आदमी (जन, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा, बहुवचन)

जलम् जल / जल को (जल, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया, एकवचन)

जलाशयः तालाब (जलाशय, पुंल्लिङ्ग ,प्रथमा, एकवचन)

जले पानी में (जल, नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी, एकवचन)

त

तटः / तटम् किनारा (तट, पुंल्लिङ्ग / नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

तटे किनारे पर (तट, पुंल्लिङ्ग / नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

तड़ागः (एक) तालाब (तड़ाग, पुंल्लिङ्ग , प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

तड़ागे तालाब में (तड़ाग, पुंल्लिङ्ग , सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

तत् वह (त त्, नपुंसकलिङ्ग , प्रथमा / द्वितीया ि भक्ति, एकवचन)

ततः वहाँ से, उ सके बाद (अव्यय)

तत्र वहाँ (अव्यय)

तदा तब (अव्यय)

तरङ्गाः लहरें (तरङ्ग, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

तरङ्गैः सह लहरों के साथ (तरङ्ग, पुंल्लिङ्ग , तृतीया, बहुवचन)

तरन्ति तैरते हैं / तैरती हैं (तृ, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

तव तुम्हारा / तुम्हारी (युष्मद्, षष्ठी, एकवचन)

तस्य उसका / उसके / उसकी (तत् पुंल्लिङ्ग, षष्ठी, एकवचन)

ताः (स्त्री.) वे सब (स्त्रियाँ) (तत्, स्त्री., प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

तित्तलिकाः तितलियाँ (तित्तलिका, स्त्री., प्रथमा, बहुवचन)

तीरे किनारे पर (तीर, नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी, एकवचन)

तीर्त्वा तैर कर (तृ क्त्वा, अव्यय)

तु तो (विरोधसूचक अव्यय)

तुष्यन्ति सन्तुष्ट होते हैं / होती हैं (तुष्, लट्, प्र. पु., बहुवचन) प्रसन्न होते हैं/ होती हैं

ते (पुं.) वे सब (तद्, पुंल्लिङ्ग, सर्वनाम, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

तेषाम् उनका / उनकी / उनके (तत्, सर्वनाम षष्ठी, बहुवचन)

त्रोटयति तोड़ता है / तोड़ती है (त्रुट्, लोट्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

त्वम् तुम (युष्मद्, सर्वनाम प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

त्वया सह तुम्हारे साथ (युष्मद्, तृतीया, एकवचन, सहयोगे तृतीया)

द

ददाति देता है / देती है (दा, लट्, प्र. पु., एकवचन)

दाडिमम् अनार / अनार को (दाडिम, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

दानेन दान से (दान, नपुंसकलिङ्ग, तृतीया, एकवचन)

दुःखभाग् दुःखी (दुःखभाज्, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

दुग्धम् दूध को (दुग्ध, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया, एकवचन)

दुर्भिक्षे अकाल में, सूखा पड़ने पर (दुर्भिक्ष, नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी, एकवचन)

दूरम् दूर (अव्यय)

दृष्ट्वा देखकर (दृश् , क्त्वा अव्यय)

देवालयः मन्दिर (देवालय, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

देवालयम् मन्दिर को (देवालय, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

देवेभ्यः देवताओं के लिए (देव, चतुर्थी / पञ्चमी, बहुवचन)

दैवम् भाग्य (दैव, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

द्रक्ष्यसि देखोगे / देखेगी (दृश्, लृट्, म. पु., एकवचन)

द्रक्ष्यामि देखूँगा / देखूँगी (दृश्, लृट्, उ. पु., एकवचन)

द्रुमाः (बहुत से) पेड़ (द्रुम, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

द्रुमाणाम् पेड़ों का / के / की (द्रुम, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

द्रुमेषु पेड़ों में / पर (द्रुम, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, बहुवचन)

द्राक्षाफलानि (बहुत से) अंगूर (द्राक्षाफल, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

द्विचक्रिकया (एक) साईकिल से/द्वारा (द्विचक्रिका, स्त्रीलिङ्ग, तृतीया विभक्ति एकवचन)

ध

धारयामः धारण करते है / धारण करती हैं (धृ, लट्, उ. पु., बहुवचन)

धावति दौड़ता है/दौड़ती है (धाव्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

धावन्ति दौड़ते हैं / दौड़ती हैं (धाव्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

धावनप्रतियोगितायाम् दौड़ की प्रतियोगिता मे (धावन प्रतियोगिता, स्त्रीलिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

धीमताम् बुद्धिमानों का / के / की (धीमत्, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

धीवराः (बहुत से) मल्लाह (धीवर, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

न

न नहीं (अव्यय)

नखः (एक) नाखून (नख, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

नद्याम् नदी मे (नदी, स्त्रीलिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

नमन्ति झुकते हैं / झुकती हैं (नम्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

नयने (दो) आँखें (नयन, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया विभक्ति, द्विवचन)

नराः (बहुत से) मनुष्य (नर, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

नवनीतम् मक्खन (नवनीत, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

नहि नहीं (अव्यय)

नायकः (एक) नेता (नायक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

नारिकेलम् (एक) नारियल फल, नारियल को (नारिकेल, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

नासा (एक) नाक (नासा, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

नासिका (एक) नाक (नासिका, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

निग्रहम् दण्ड को (निग्रह, पुंल्लिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

निद्रया नींद से (निद्रा, स्त्रीलिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

निन्दन्ति निन्दा करते हैं/ करती हैं (निन्दा, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

निपातितः गिराया गया (नि + पत् + णिच्, 'क्त, प्रत्यय, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

निरामयाः नीरोग (निरामय, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

निर्धनेभ्यः गरीबों के लिए (निर्धन, पुंल्लिङ्ग, चतुर्थी/ पञ्चमी विभक्ति, बहुवचन)

निर्बुद्धेः बुद्धिरहित का/ के/ की (निर्बुद्धि, स्त्रीलिङ्ग , षष्ठी, एकवचन)

निर्मलम् (वि.) साफ, पवित्र (निर्मल, नपुंसकलिङ्ग , प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

निर्मितेषु बनाए हुओं में (निर्मित, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, बहुवचन)

निवसन्ति रहते हैं / रहती हैं (नि + वस्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

निवेदयितुम् निवेदन करने के लिए (नि + विद् + णिच्, तुमुन् प्रत्यय)

नीडेषु घोंसलों में (नीड, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, बहुवचन)

नृत्यति नाचता है / नाचती है (नृत्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

नृत्यामि नाचता हूँ / नाचती हूँ (नृत्, लट्, उ. पु., एकवचन)

नेत्रम् (एक) आँख (नेत्र, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

नौकया (एक) नौका से/ नाव से (नौका, स्त्रीलिंङ्ग तृतीया विभक्ति, एकवचन)

नौकाः (बहुत सी) नावें (नौका, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

न्यपतत् कूद गया/ नीचे गिर गया (नि + पत्, लङ्, प्र. पु., एकवचन)

प

पङ्कजानि (बहुत से) कमल (पङ्कज, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

पचति पकाता है/ पकाती है (पच्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

पञ्चत्वम् मृत्यु को (पञ्चत्व, नपुंसकलिङ्ग प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

पठति पढ़ता है/ पढ़ती है (पठ्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

पठथ पढती हो/ पढ़ते हो (पठ्, लट्, म. पु., बहुवचन)

पठन्ति पढ़ते हैं/ पढ़ती हैं (पठ्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

पठसि पढ़ते हो/ पढ़ती हो (पठ्, लट्, म. पु., एकवचन)

पठामः पढ़ते हैं/ पढ़ती हैं (पठ्, लट्, म. पु., एकवचन)

पठामि पढ़ता हूँ/ पढती हूँ (पठ्, लट्, उ. पु., एकवचन)

पतति गिरता है (पत्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

पतन्ति गिरते हैं/ गिरती हैं (पत्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

पतामि गिरता हूँ /गिरती हूँ (पत्, लट्, उ. पु., एकवचन)

पत्राणाम् पत्रों का / के / की (पत्र, नपुंसकलिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

पत्राणि बहुत सी पत्तियाँ (पत्र, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

पथिकः राहगीर (पथिक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

परपीडनम् दूसरे को कष्ट देना (परपीडन, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/द्वितीया, एकवचन)

परहस्तेषु दूसरे के हाथों में (परहस्त, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी, बहुवचन)

परिचर्याम् सेवा को (परिचर्या, स्त्रीलिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

परिवृतः घिरा हुआ (परि + वृ, क्त प्रत्यय, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

परिवेशयतु परोसें (परि + विश्,णिच, लोट्, प्र. पु., एकवचन)

परोपकाराय दूसरों की भलाई के लिए (परोपकार, पुंल्लिङ्ग, चतुर्थी विभक्ति, एकवचन)

पशून् जानवरों को (पशु, पुंल्लिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

पश्यति देखता है / देखती है (दृश् - पश्य, लट्, प्र. पु., एकवचन)

पश्यथ देखते हो / देखती हो (दृश् - पश्य, लट्, म. पु., एकवचन)

पश्यन्तु देखें (दृश् - पश्य, लोट्, प्र. पु., बहुवचन)

पश्यसि देखते हो / देखती हो (दृश् - पश्य, लट्, म. पु., एकवचन)

पश्यामः देखते हैं / देखती हैं (दृश् - पश्य, लट्, उ. पु., बहुवचन)

पातयन्ति गिराते हैं / गिराती हैं (पत् + णिच्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

पादः (एक) पैर (पाद, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

पादेन (एक) पैर से (पाद, पुंल्लिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

पाणिः (एक) हाथ (पाणि, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

पिकस्य कोयल का / के / की (पिक, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

पितृजनाः माता-पिता (पितृजन, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

पिपासया प्यास से (पिपासा, स्त्रीलिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

पिबत पिओ (पा - पिब्, लोट्, म. पु., बहुवचन)

पिबसि पीते हो / पीती हो (पा - पिब्, लट्, म. पु., एकवचन)

पुत्रः (एक) बेटा (पुत्र, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

पुत्री (एक) बेटी (पुत्री, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

पुनः फिर / दुबारा (अव्यय)

पुराणेषु पुराणों में (पुराण, नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, बहुवचन)

पुष्पाणि (बहुत से) फूल (पुष्प, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया, बहुवचन)

पुस्तकम् (एक) किताब (पुस्तक, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया, एकवचन)

पुस्तकानि किताबों को (पुस्तक, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया, एकवचन)

पुस्तकेषु किताबों में (पुस्तक, नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, बहुवचन)

पूजायै पूजा के लिए (पूजा, स्त्रीलिङ्ग, चतुर्थी विभक्ति, एकवचन)

पूरयत पूरा करो (पूर् + णिच्, लोट्, म. पु., बहुवचन)

पुरस्कारम् इनाम को (पुरस्कार, पुंल्लिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

पृच्छति — पूछता है / पूछती है (प्रच्छ्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

पोषणाय — पोषण के लिए (पोषण, नपुंसकलिङ्ग, चतुर्थी, एकवचन)

प्रतिदिनम् — रोज (अव्यय)

प्रत्यागच्छाम — वापस आ गए / गईं (प्रति+आ+ गम्, उ. पु., बहुवचन)

प्रदेशस्य — प्रान्त का / के / की (प्रदेश, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

प्रविशन्ति — प्रवेश करते हैं / करती हैं (प्र + विश् + लट्, प्र. पु., बहुवचन)

प्रसार्य — फैलाकर (प्र + सृ + णिच्,+ ल्यप्, प्रत्यय)

प्रसीदतु — प्रसन्न हो (प्र + सीद्, लोट्, म. पु., एकवचन)

प्रहृष्टाः — आनन्दित (प्र + हृष्, 'क्त' प्रत्यय, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

प्रातः — सुबह (अव्यय)

प्रातराशः — जलपान (प्रातराश, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

प्राप्नोति — प्राप्त करता है/करती है (प्र+ आप्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

प्रावहत् — बहने लगा (प्र + वह् + लङ्, प्र. पु., एकवचन)

प्रियंवाक्यप्रदानेन — मीठे वचन बोलने से (नपुंसकलिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

प्रेषयिष्यामः — भेजेंगे (प्रेष् + णिच्, लट्, उ. पु., बहुवचन)

फ

फलानि — (बहुत से) फल (फल, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

फलिनः — फलवाले, फलयुक्त (फलिन्, नपुसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

ब

बकः — (एक) बगुला (बक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

बकस्य — बगुले का / के / की (बक, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

बहवः — बहुत से (बहु, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

बहिः — बाहर (अव्यय)

बहूनि — बहुत से (बहु, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा / द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

बालकः — (एक) लड़का (बालक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

बालकाः — (बहुत से) लड़के (बालक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

बालकानाम् — लड़कों का / के / की (बालक, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

बालकेभ्यः — लड़कों के लिए (बालक, पुंल्लिङ्ग, चतुर्थी / पञ्चमी विभक्ति, बहुवचन)

बालिका — (एक) लडकी (बालिका, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

बालिकाः ! हे लड़कियो ! (बालिका, स्त्रीलिङ्ग, सम्बोधन, बहुवचन)

बालुकाभिः रेतों से / के द्वारा (बालुका, स्त्रीलिङ्ग, तृतीया विभक्ति, बहुवचन)

बालुकानाम् रेतों का / के / की (बालुका, स्त्रीलिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

भ

भक्षकः खाने वाला (भक्षक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

भल्लूकः (एक) भालू (भल्लूक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

भवति होता है / होती है (भू, लट्, प्रथम पुरुष, एकवचन)

भवन्तु हों (भू, लोट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन)

भविष्यन्ति होंगे / होंगी (भू, लृट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन)

भवान् आप (भवत्, सर्वनाम, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा, एकवचन)

भवेत् हो, होना चाहिए (भू, विधि लिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन)

भूषणम् आभूषण, गहना (भूषण, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

भूषिताः विभूषित (भूष्, 'क्त' प्रत्यय, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

भ्रमणाय भ्रमण के लिए (भ्रमण, पुंल्लिङ्ग, चतुर्थी विभक्ति, एकवचन)

भ्रमथ घूमते हो / घूमती हो (भ्रम्, लट्, मध्यम पुरुष, बहुवचन)

भ्रमराः (बहुत से) भँवरे (भ्रमर, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

भ्रमामि घूमता हूँ / घूमती हूँ (भ्रम्, लट्, उत्तम पुरुष, एकवचन)

भ्रमिष्यन्ति घूमेंगे /घूमेंगी (भ्रम्, लृट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन)

भ्राता भाई (भ्रातृ, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा, एकवचन)

म

मकरः (एक) मगरमच्छ (मकर, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

मग्नः डूब गया (मज्ज, क्त प्रत्यय, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

मञ्जूषातः कोष्ठक से (मञ्जूषा, तसिल् प्रत्यय)

मत्स्यः एक मछली (मत्स्य, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

मत्स्याः (बहुत सी) मछलियाँ (मत्स्य, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

मधुरः मीठा (मधुर, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, वहुवचन)

मन्दं मन्दम् धीरे-धीरे (अव्यय)

मम मेरा / मेरी (अस्मद्, सर्वनाम, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

मया मेरे द्वारा (अस्मद्, सर्वनाम, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

मया सह मेरे साथ

मयूराः (बहुत से) मोर (मयूर, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

मा मत (अव्यय)

मातुलः मामा (मातुल, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

मानेन प्रतिष्ठा से / के द्वारा (मान, पुंल्लिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

माम् मुझे / मुझको (अस्मद्, सर्वनाम, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

मार्गे रास्ते में (मार्ग, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

मालाः (बहुत सी) मालायें (माला, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा, द्वितीया विभक्ति, बहुवचन)

मालाकारात् माली से (मालाकार, पुंल्लिङ्ग, पञ्चमी विभक्ति, एकवचन)

मित्रस्य दोस्त का/ के / की (मित्र, नपुंसकलिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

मित्रेण दोस्त से / के द्वारा (मित्र, नपुंसकलिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

मित्रेण सह दोस्त के साथ

मित्रैः दोस्तों से/ के द्वारा (मित्र, नपुंसकलिङ्ग, तृतीया विभक्ति, बहुवचन)

मित्रैः सह दोस्तों के साथ

मिष्टान्नम् मिठाई को (मिष्टान्न, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

मुक्तिः मोक्ष (मुक्ति, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

मुखम् (एक) मुँह, मुख को (मुख, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

मुख्यः प्रमुख (मुख्य, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

मूर्खाणाम् मूर्खों का/ की / के (मूर्ख, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

मूषकः (एक) चूहा (मूषक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

मूषकाणाम् चूहों का / की / के (मूषक, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

मूषिका (एक) चुहिया (मूषिका, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

मृगाः (बहुत से) हिरन (मृग, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

मेघानाम् बादलों का / की/ के (मेघ, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

मोटरयानेन मोटर गाड़ी से / 'कार' से (मोटरयान, नपुंसकलिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

मोहनस्य मोहन का/ की / के (मोहन, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

य

यथास्थानम् उचित स्थान पर (अव्यय)

यदा जब (अव्यय)

या जो (यत्, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

युष्माकम् तुम लोगों का/की/ के (युष्मद्, सर्वनाम, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

यूयम् तुम लोग (युष्मद, सर्वनाम, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

र

रक्तम् खून, खून को (रक्त, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

रक्षकः रक्षा करने वाला (रक्षक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा, एकवचन)

रचयति बनाता है / बनाती है (रच्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

रचयामि बनाता हूँ / बनाती हूँ (रच्, लट्, उ. पु., एकवचन)

रथस्य रथ का / की / के (रथ, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

रथेन रथ से / के द्वारा (रथ, पुंल्लिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

रमे ! हे रमा (रमा, स्त्रीलिङ्ग, सम्बोधन, एकवचन)

राजद्वारे राजदरबार में (राजदरबार, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

राष्ट्रविप्लवे देश पर विपत्ति आने पर (राष्ट्रविप्लव, पुल्लिंङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

रिक्तस्थानानि खाली स्थानों (को)(रिक्त स्थान, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/द्वितीया, बहुवचन)

ल

लताः (बहुत सी) लताएँ (लता, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

लते ! हे लता ! (लता, स्त्रीलिङ्ग, सम्बोधन, एकवचन)

लिखत लिखो (लिख्, लोट्, म. पु., बहुवचन)

लिखन्ति लिखते हैं/ लिखती हैं (लिख्, प्र. पु., बहुवचन)

लेखम् लेख को / निबन्ध को (लेख, पुंल्लिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

व

वक्तव्यम् बोलना चाहिए (नपुंसकलिङ्ग, वच्, ब्रू, तव्यत्, प्रत्यय)

वचनद्वयम् दो वचन

वदामि बोलता हूँ / बोलती हूँ (वद्, लट्, उ. पु., एकवचन)

वन्दनाम् प्रार्थना को (वन्दना, स्त्रीलिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

वर्तकाः (बहुत से) बतख (वर्तक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

वर्णः रङ्ग (वर्ण, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

वयम् हम सब (अस्मद्, सर्वनाम, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

वसति स्म रहता था / रहती थी (वस्, लट्, प्र. पु., एकवचन, 'स्म' लगने से भूतकाल)

वसन्ति स्म रहते थे / रहती थीं (वस्, लट्, प्र. पु., बहुवचन, ' स्म' लगने से भूतकाल)

वसामि रहता हूँ / रहती हूँ (वस्, लट्, उ. पु., एकवचन)

वाक्यानि वाक्य, वाक्यों को (वाक्य, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति बहुवचन)

वाटिका (एक) बाग/बगीचा (वाटिका, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

वानरः (एक) बन्दर (वानर, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

वार्तालापे बातचीत में (वार्तालाप, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

विकसन्ति खिलते हैं / खिलती हैं (वि + कस्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

विचरन्ति विचरण करते हैं / विचरण करती हैं (वि + चर्, लट्, प्र. पु.,बहुवचन)

विद्यालयम् पाठशाला को (विद्यालय, पुंल्लिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

विद्यालयस्य विद्यालय का/ के / की (विद्यालय, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति,एकवचन)

विद्यालये पाठशाला में (विद्यालय, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

विद्धः बेध दिया / बींध दिया गया / बिंधा हुआ (विध्, क्त प्रत्यय, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

विनोदेन आनन्द से (विनोद, पुंल्लिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

विविधाः बहुत प्रकार के (विविध, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

विषज्वालाभिः विष की ज्वालाओ से (विषज्वाला, स्त्रीलिङ्ग, तृतीया विभक्ति, बहुवचन)

विहरथ विहार करते हो/करती हो (वि + हृ, लट्, म. पु., बहुवचन)

विहरन्ति विहार करते हैं / करती हैं (वि+ हृ, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

विहरसि तुम विहार करते हो /विहार करती हो (वि + हृ, लट्, म. पु.,एकवचन)

वृक्षः (एक) पेड़ (वृक्ष, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

वृक्षतले पेड़ के नीचे (वृक्षतल, नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

वृक्षाः (बहुत से) पेड़ (वृक्ष, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

वृक्षाणाम् पेड़ों का / के / की (वृक्ष, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

वृक्षात् पेड़ से (वृक्ष, पुंल्लिङ्ग, पञ्चमी विभक्ति, एकवचन)

वृक्षेभ्यः पेड़ों से / के लिए (वृक्ष, पुंल्लिङ्ग, चतुर्थी / पञ्चमी विभक्ति, बहुवचन)

वृक्षेषु पेड़ो पर (वृक्ष, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, बहुवचन)

वृत्तान्तम् समाचार को (वृत्तान्त, पुंल्लिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

वृष्टिः वर्षा / बारिश (वृष्टि, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

वेगेन वेग से (वेग, पुंल्लिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

व्यसने व्यसन मे (व्यसन, नपुंसकलिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

व्यासस्य व्यास (मुनि) का / के / की (व्यास, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति,एकवचन)

शा

शङ्खाः (बहुत से) शङ्ख (शङ्ख, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

शङ्खानाम् शङ्खों का / के / की (शङ्ख, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन)

शठ ! दुष्ट (शठ, पुंल्लिङ्ग, सम्बोधन, एकवचन)

शनैः-शनैः धीरे-धीरे (अव्यय)

शब्दस्य शब्द का / के / की (शब्द, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

शरेण शर से / बाण से (शर, पुंल्लिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन)

शालाम् पाठशाला को (शाला, स्त्रीलिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

शिक्षिका (एक) अध्यापिका (शिक्षिका, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

शीघ्रम् जल्दी (अव्यय)

शीतलम् ठण्डा (शीतल, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

शीतलं पेयम् ठण्डा पेय (कोल्ड ड्रिंक्स)

शीतला ठण्डी (शीतला, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

शुकः (एक) तोता (शुक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

शुकस्य तोते का / के /की (शुक, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति,एकवचन)

शुष्कः सूखा हुआ (शुष्क, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

शुष्काः जाताः सूख गए (प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

शोभनम् बहुत अच्छा (अव्यय)

श्वः कल (आनेवाला) (अव्यय)

श्वेतः सफेद (श्वेत, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

ष

षड्वर्षीयः छः वर्ष की आयु वाला (षड्वर्षीय पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

स

सः वह (तत्, सर्वनाम पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

सञ्चयम् सङ्ग्रह को (सञ्चय, पुंल्लिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

सत्वरम् जल्दी (अव्यय)

सन्ति हैं (अस्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

समग्रम् पूरा (अव्यय)

समीपे पास (अव्यय)

समुद्रस्य समुद्र का / के / की (समुद्र, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)

समुद्रे समुद्र में (समुद्र, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)

सर्वम् सब कुछ (सर्व, सर्वनाम, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

सर्वे सभी लोग (सर्व, सर्वनाम, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

सह साथ (अव्यय)

सा वह (तत्, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

सायम् शाम को (अव्यय)

सिद्ध्यन्ति पूरे होते हैं / होती हैं (सिध्, लट्, प्र. पुं., बहुवचन)

सिंहः (एक) शेर (सिंह, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

सिंही (एक) शेरनी (सिंह, स्त्रीलिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

सुप्तस्य सोये हुए का/ के / की (सुप्त, पुंल्लिङ्ग, षष्ठी, एकवचन)

सूर्याय सूर्य के लिए (सूर्य, पुंल्लिङ्ग, चतुर्थी विभक्ति, एकवचन)

सैनिकाः (बहुत से) सैनिक (सैनिक, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

स्तोत्रम् स्तुति को (स्तोत्र, नपुंसकलिङ्ग, प्रथमा/ द्वितीया विभक्ति, एकवचन)

स्नातुम् स्नान / नहाने के लिए (स्ना, तुमुन् प्रत्यय)

स्नात्वा नहाकर (स्ना, क्त्वा प्रत्यय)

स्नानाय स्नान/नहाने के लिए (स्नान, नपुंसकलिङ्ग, चतुर्थी विभक्ति, एकवचन)

स्व अपना/ अपने (अव्यय)

स्वरः आवाज (स्वर, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

ह

हरितः हरा (हरित, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

हसति हँसता है / हँसती है (हस्, लट्, प्र. पु., एकवचन)

हसन्ति हँसते हैं / हँसती हैं (हस्, लट्, प्र. पु., बहुवचन)

हससि हँसते हो / हँसती हो (हस्, लट्, म. पु., एकवचन)

हस्तः (एक) हाथ (हस्त, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

हस्ताः (बहुत से) हाथ (हस्त, पुंल्लिङ्ग, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

हस्ते हाथ में (हस्त, पुंल्लिङ्ग, सप्तमी विभक्ति, एकवचन)